खण्ड-441, अंक-3
गुरूवार, 26 वैशाख, शक संवत् 1924
(16 मई, 2002 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(चौदहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 2002)

खण्ड 441 में 8 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

2002

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	क
वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री मंजूर अहमद के निधन पर शोकाद्गार ...	1–6
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य, श्री मुराद लारी, श्री वेद प्रकाश, श्री शिव दर्शन, श्री श्रीप्रकाश उर्फ ज्ञानू, श्री हरी किशन, श्री श्यामधर मिश्र, श्रीमती कैलाशपति, श्रीमती सिया दुलारी, श्री राघव राम पाण्डेय, श्री विष्णु देव, श्री भोला शंकर मौर्य, श्री भगत राम प्रेमी, श्री दौलत राम, श्री श्याम लाल चौधरी, श्री सरस्वती प्रताप सिंह, श्री विजय पाल सिंह, श्री फजलुर्रहमान अंसारी, श्री भगवान दीन कुशवाहा, श्री भगवान दीन, श्री भगौती सिंह, श्री राधेश्याम कपूर एवं श्री मोती लाल देहलवी के निधन पर शोकाद्गार	6–13
वर्तमान लोक सभा के अध्यक्ष श्री जी०एम०सी० बालयोगी के निधन पर शोकाद्गार (जारी)	13
पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह की पत्नी श्रीमती ज्ञान कौर, पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी, (भूतपूर्व सदस्य विधान सभा) एवं पूर्व उप प्रधान मंत्री श्री जगजीवन राम की पत्नी श्रीमती इन्द्राणी देवी के निधन पर तथा गुजरात के दंगों में मारे गये निर्दोष व्यक्तियों के प्रति शोकोद्गार (जारी)	13–19
सदन में मर्यादित परम्पराओं के पालन का अनुरोध श्री जगदम्बिका पाल का निष्कासन तथा उनके निष्कासन की वापसी	19–24
वर्तमान लोक सभा के अध्यक्ष श्री जी०एम०सी० बालयोगी के निधन पर शोकोद्गार पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह की पत्नी श्रीमती ज्ञान कौर, पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी, (भूतपूर्व सदस्य विधान सभा) एवं पूर्व उप प्रधान मंत्री श्री जगजीवन राम की पत्नी श्रीमती इन्द्राणी देवी के निधन पर तथा गुजरात के दंगों में मारे गये निर्दोष व्यक्तियों के प्रति शोकोद्गार	24–33

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(चौदहवीं विधान सभा)

गुरुवार, दिनांक 16 मई, 2002

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी मा० सदस्य उपस्थित थे :—

1–अजय कपूर, श्री — कानपुर नगर
2–अतीक अहमद, श्री — इलाहाबाद
3–अंसार अहमद, श्री — इलाहाबाद
4–अवधेश प्रसाद, श्री — फैजाबाद
5–अशोक कुमार कटियार, श्री — कानपुर देहात
6–अशोक सिंह चौहान, श्री — मैनपुरी
7–आर० के० चौधरी, श्री — लखनऊ
8–आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री — बदायूं
9–इन्द्रदेव सिंह, डा० — बिजनौर
10–उदयभान सिंह, श्री — वाराणसी
11–ऊषा वर्मा, श्रीमती — हरदोई
12–ओम प्रकाश, श्री — सीतापुर
13–छोटे लाल, श्री — बाराबंकी
14–जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री — कुशीनगर/पडरौना
15–जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भैया, श्री — गोरखपुर
16–धर्मपाल सिंह, श्री — बरेली
17–फतेह बहादुर, श्री — महराजगंज
18–बलराम यादव, श्री — आजमगढ़
19–विजय सिंह, श्री — फर्रुखाबाद
20–बीना भारद्वाज, श्रीमती — रामपुर
21–वीरेन्द्र सिंह बुन्देला 'भगत राजा', श्री — ललितपुर
22–भगवत सरन गंगवार, श्री — बरेली
23–मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री — रायबरेली
24–महेन्द्र सिंह यादव, श्री — बुलन्दशहर
25–महेश नारायण सिंह, श्री — इलाहाबाद
26–मुश्ताक सोलंकी, ह्राजी — कानपुर नगर
27–मोख्तार अंसारी, श्री — मऊ
28–यशवन्त सिंह, डा० — मुजफ्फरनगर
29–योगेन्द्र कुमार, श्री — बदायूं
30–रतन लाल अहिरवार, श्री — झांसी
31–राकेश पाण्डेय, श्री — अम्बेडकर नगर
32–राजनाथ सिंह, श्री — बाराबंकी
33–राजा राम, श्री — प्रतापगढ़
34–राधेश्याम, श्री — सीतापुर
35–रामनाथ, श्री — प्रतापगढ़
36–राम पाल यादव, श्री — सीतापुर
37–राम प्रताप सिंह, श्री — गोण्डा
38–राम बाबू हरित, डा० — आगरा
39–वकार अहमद शाह, डा० — बहराइच
40–विजय कुमार मिश्रा, श्री — सन्त रविदास नगर भदोही
41–विजया यादव, श्रीमती — इलाहाबाद
42–विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री — गोण्डा
43–वीरेन्द्र सिंह, श्री — बरेली
44–वीरेन्द्र सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
45–वीरेश्वर, श्री — अलीगढ़
46–शिव कुमार बेरिया, श्री — कानपुर देहात
47–शिव पाल सिंह यादव, श्री — इटावा
48–सतीश महाना, श्री — कानपुर नगर
49–सदल प्रसाद, श्री — गोरखपुर
50–सलिल विश्नोई, श्री — कानपुर नगर
51–सीताराम निषाद, श्री — फैजाबाद
52–सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री — वाराणसी
53–हरि प्रताप सिंह, श्री — प्रतापगढ़

उत्तर प्रदेश विधान सभा

गुरुवार, दिनांक 16 मई, 2002

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री मंजूर अहमद के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी, उत्तर प्रदेश विधान सभा के वर्तमान सदस्य श्री मंजूर अहमद की लखनऊ में 6 मार्च को हत्या कर दी गयी थी । वे लगभग 64 वर्ष के थे और बरेली जिले के रहने वाले थे तथा बरेली में बहेड़ी विधान सभा की सीट से इलेक्ट हुए थे । बरेली में वह एक कर्मठ और जनप्रिय नेता थे और कई सामाजिक आन्दोलनों में उन्होंने भाग भी लिया था । जिन आन्दोलनों में उन्होंने भाग भी लिया उसमें उनकी काफी सराहनीय भूमिका रही है । उनके निधन से उनके क्षेत्र के लोगों ने कमी महसूस की है । उनके निधन पर मैं सदन की ओर से और अपने दल की ओर से गहरा दुःख प्रकट करती हूँ और इसके साथ ही देश में कुछ ऐसे व्यक्तित्व रहे हैं, जिनकी दुर्घटनावश .....

श्री अध्यक्ष–

उसको बाद में करेंगे, आपका इशारा भी बालयोगी जी की तरफ है ।

सुश्री मायावती–

ठीक है उनके निधन पर गहरा दुख प्रकट करती हूँ और कुदरत से प्रार्थना करती हूँ कि कुदरत उनके परिवार को सुख शान्ति प्रदान करें ।

नेता विरोधी दल (मो० आजम खाँ)–

अध्यक्ष जी, मंजूर अहमद साहब 6 मार्च, 2002 को लखनऊ में मार दिये गये । जाहिर है कि यह हत्या थी और आम मौत नहीं थी । मंजूर अहमद साहब हमारे दल के एक ऐसे साथी थे, जिनकी याद को आसानी से भुलाया नहीं जा सकेगा । 28 नवम्बर, 1938 को बरेली के बहेड़ी में पैदा होने वाले एक दरम्यानी दरजे के कार्यकर्ता ने, एक शख्स ने, एक इन्सान ने समाज की सेवा करके अपने आपको बहुत आगे तक पहुँचाया था । वर्ष 1993 में और सन् 2002 में वह हमारे दल से चुने गये और 1989 में निर्दलीय रूप में भी उन्होंने विधान सभा में सदस्य रहने का अवसर प्राप्त रहा है । वे दारूलउलूम मदरसा शेरिया के मैनेजर रहे । नगरपालिका बहेड़ी के 1964 से 1971 तक चेयरमैन रहे, उत्तर प्रदेश जेल परचेजिंग कमेटी के सदस्य रहे । मान्यवर, जो मुझे यहां आपके माध्यम से सदन के समक्ष रखना है, वह यह है कि जो लोग समाज में सही मायनों में सेवा करते हैं, समाज उनको अपनाता भी है और समाज उसका पलटकर जवाब भी देता है । मान्यवर, मैंने बड़े–बड़े समाजसेवियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं की मौत को देखा है, जनता में उनकी लोकप्रियता को भी देखा है । उनके मरने पर, उनकी याद में बाजार बन्द होते हैं लोग दुःखी होते हैं लेकिन यह सारी चीजें अलामती और सिम्बालिक होती हैं । लेकिन मंजूर अहमद साहब जिन्हे उनके निर्वाचन क्षेत्र बहेड़ी, उनके जनपद बरेली और शायद उत्तर प्रदेश के लोग ही उन्हें जानते रहे होंगे, उनका नाम किसी राष्ट्रीय नेता के रूप में नहीं जाना गया है फिर भी उनकी मृत्यु पर तीन रोज तक बहेड़ी की न कोई दुकान खुली और न ही कोई बड़ी ठेला ही चला और गरीब से गरीब व्यक्ति ने इस नेता की याद में तीन दिनों तक परेशानी तो उठायी लेकिन वे बाहर नहीं

निकले । इसकी वजह थी, क्योंकि उनका निधन नहीं हुआ था, उनकी बीमारी से मौत नहीं हुई थी, किसी सड़क हादसे में वे नहीं मारे गये थे, उनकी हत्या राजा के दरवाजे पर हुई थी, जबकि प्रजा में रहने वाले किसी कमजोर व्यक्ति की या प्रजा में काम करने वाले किसी अगुवा की हत्या राजा के दरवाजे पर हो जाय तो राजा के दरवाजे पर होने वाली ऐसी हत्या से बंगले के अन्दर रहने वाले राजा की भी पोल खुलती है और जनता में दहशत फैल जाती है । हमने एक बहुत अच्छा साथी खोया है । मैं मालिक से दुआ करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे ।

आवास एवं नगर विकास मंत्री (श्री लाल जी टण्डन)–

मान्यवर, लोकतन्त्र एक ऐसी विधा है कि हम कभी-कभी आपस में कटु बातें भी कर लेते हैं लेकिन जब कोई साथी इस दुनिया से चला जाता है तो सबके मन भर जाते हैं और लगता है कि हमने अप परिवार का कोई सदस्य खो दिया है । मंजूर अहमद साहब की हत्या हुई है, हर कोई इसकी निर करेगा । हमने तो सबक लिया है कि जब राजनैतिक रैलियां या प्रदर्शन होते हैं, हमने अपने सहयोगियों से कहा है कि आप ऐसे तत्वों पर नजर रखें जो ऐसे अवसरों पर दुष्कृत्य करना चाहते हैं । उस दिन भी एक बड़ा हादसा होने से बच गया लेकिन उसमें मंजूर अहमद साहब की कुर्बानी हुई । मान्यवर, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति दें और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे । उनकी असामायिक मृत्यु से हम सब दुःखी है ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मंजूर साहब के निधन पर जो विचार नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और उप नेता भारतीय जनता पार्टी ने व्यक्त किये हैं मैं अपने आपको और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उससे सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, जो इस दुनिया में आया है, उसे जाना तो पड़ता ही है, यह सृष्टि का नियम है । पर कुछ ऐसे हादसे हो जाते हैं जो अपने पीछे बहुत सारे सवाल छोड़ जाते हैं । 1989 में जब वे पहली बार निर्दलीय सदस्य के रूप में आये थे तो हम सभी ने उनको अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करते देखा था । जब वे बोलते थे, गरीबों के लिए बोलते थे, खासकर बहेड़ी के लिए बोलते थे । उनका जीवन वार्ड मेम्बर के रूप में शुरू हुआ था । वह आम आदमी के दुःख-दर्द को समझते थे । उनके निधन से एक मजबूत आवाज हमेशा-हमेशा के लिए थम गयी । मान्यवर, आज इस अवसर पर मैं अपनी ओर से अपने दल की शोक संवेदनाएं आपको देते हुए आपसे अनुरोध करूँगा कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुँचा दें । परन्तु मैं एक और अनुरोध करना चाहता हूँ कि जब एक विधायक की नृशंस हत्या राजभवन के सामने राजधानी की सड़कों पर की जाती है तो फिर आपके सामने आम जनता की सुरक्षा का सवाल खड़ा हो जाता है, इस सवाल का जवाब तो ढूँढ़ना पड़ेगा । नेता सदन को भी ढूँढ़ना पड़ेगा । अपने कर्तव्यों के पालन में कभी कभी हमें कठोर कदम भी उठाने पड़ सकते हैं जो बहुतों के लिए अलोकप्रिय होते हैं । खासतौर से उन लोगों के लिए मान्यवर, जो समाज के गरीब और मजबूर लोगों को निर्दोष लोगों को सताते हैं । मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे अनुरोध करूँगा कि मान्यवर, अब आगे से विधायकों की सुरक्षा के प्रति किसी तरह की कोई लापरवाही न होने पाये । मान्यवर, इसी के साथ आपसे फिर आग्रह करता हूँ कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुँचा दें ।

श्री कौकब हमीद–

मान्यवर, मौत तो एक हकीकत है लेकिन मंजूर अहमद की हत्या जिस अंदाज में हुई वह सोचने का बिन्दु जरूर है । अगर इसी तरह से विधायकों की हत्याएं होती रहेंगी तो एक प्रश्न चिन्ह जरूर लग जाएगा कि वह सुरक्षित हैं कि नहीं । मंजूर भाई तीन बार इस सदन के मेम्बर रहे हैं और व्यक्तिगत रूप से भी मैं उन्हें जानता हूँ वह बहुत अच्छे व्यक्ति थे नेक आदमी थे । बहेड़ी में ही नहीं पूरे समाज में, पूरे उत्तर प्रदेश में उनके न रहने का दुःख है । मैं अपनी और अपने दल की तरफ से शोक संवेदनाएं आप तक पहुंचा रहा हूं । आप उनके शोक संतप्त परिवार तक इन्हें पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, मैं अपने तथा अपने दल की तरफ से स्वर्गीय श्री मंजूर अहमद को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ । वह बरेली की बहेड़ी विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे । वह तीन बार वहां से चुने गए थे । सबसे गहरी चिन्ता का विषय यह है कि ऐसे लोकप्रिय नेता की हत्या राजभवन के सामने राजधानी की सड़कों पर लोगों की उपस्थिति में हुई । इसकी जितनी भी निन्दा की जाय कम है । मान्यवर, यूँ तो प्रत्येक नागरिक की जान कीमती होती है लेकिन जब किसी जन प्रतिनिधि के ऊपर हमला होता है तो गहरी चिन्ता का विषय बन जाता है । मैं आपके माध्यम से शासन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि इस प्रकार के हादसे फिर न दोहराये जायें । मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी और हमारे दल की शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री राम स्वरूप सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, भाई मंजूर अहमद की हत्या जिन परिस्थितियों में की गयी थी वह बहुत दुःखद थी । महामहिम राज्यपाल के भवन के सामने हत्या हो तो वह गम्भीर बात है । मैं तो समाजवादी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को साधुवाद देता हूँ कि उन परिस्थितियों में जिस संयम और धैर्य से काम लिया, कोई उत्तेजना नहीं फैलने दी, कोई ऐसे हालात नहीं पैदा किये जिससे अव्यवस्था फैलती । उस समय मैं अपने कस्बे में मौजूद था, यह घटना सुनी तो बड़ा दुःख हुआ । आज यह हत्याओं का दौर चल रहा है तथा हमारे देश और प्रदेश की क्या स्थितियाँ हैं इस पर विचार करना पड़ेगा । यह बहुत गम्भीर स्थिति है । दुःख तो हर हत्या पर होती है लेकिन किन परिस्थितियों में और किन हालात में तथा किसकी हत्या की गयी यह गम्भीर विषय है और विधान सभा के लिए एक दुःखद बात है । हमें दल की भावनाओं से निकलने की चेष्टा करनी चाहिए । आज हमारे सोचने का तरीका बदल रहा है और हम अंधेरे की तरफ जा रहे हैं । यह एक गम्भीर सवाल है । मैं और ज्यादा न कहते हुये यह कहना चाहूँगा कि भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा आपसे प्रार्थना है कि मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें ।

श्री श्याम सुन्दर शर्मा–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीया नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष उप नेता भारतीय जनता पार्टी नेता कांग्रेस विधान मण्डल दल, नेता लोकदल, नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी एवं अन्य नेताओं ने स्वर्गीय मंजूर अहमद के बारे में जो शोक संवेदनायें प्रकट की हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूँ । वैसे तो "हरि इच्छा बलवान है । हानि लाभ जीवन मरण यश–अपयश, विधि हाथ " जो प्रभू की इच्छा होती है वही होता है । मंजूर अहमद की हत्या से सभी को कष्ट हुआ है । अच्छे आदमी के विछोह से जो तकलीफ होती है,

वह प्राण हर लेने के समान होता है । इस अवसर पर मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरी तथा मेरे दल की ओर से शोक–संवेदनाएं उनके परिवार तक भेजने का कष्ट करें ।

श्री शंख लाल माझी–

मान्यवर, इस सदन के वरिष्ठ साथी मंजूर अहमद साहब की जिस जघन्य तरीके से हत्या हुई वह सर्वथा निंदनीय है । वह हम लोगों के वरिष्ठ साथी थे । मेरे पूर्व नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य दलीय नेताओं ने जो शोक–संवेदनाएं व्यक्त की है, हम अपने को उनके साथ सम्बद्ध करते हुये अपनी तथा जनता दल (यू) परिवार की तरफ से शोक संवेदना प्रकट करता हूँ । आपसे आग्रह है कि हमारी शोक संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक भेजने का कष्ट करें ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय मंजूर अहमद के विषय में जो विचार माननीया नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस पार्टी, माननीय नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी तथा अन्य दल के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूँ । श्रीमन् मंजूर अहमद की हत्या हम लोगों के सामने ही हुई । समाजवादी पार्टी तथा उसके सहयोगी दल के विधायक महामहिम राज्यपाल महोदय के आवास के सामने धरने पर बैठे थे । और सबके सामने उनकी हत्या हुयी इससे सिद्ध होता है कि जो हम जन प्रतिनिधि बार–बार आपके माध्यम से यहां सरकार से सुरक्षा की मांग करते हैं, उनकी हत्या के बाद ऐसा लगता है कि यह सुरक्षा किसी काम की किसी के लिये नहीं है । मैंने देखा है कि बहुत बड़े आदमियों नेताओं को सुरक्षा के बीच में ही उनको मार दिया गया । लेकिन फिर भी एक सीनियर विधायक को राज्यपाल महोदय के गेट पर मार दिया जाय तो यह बहुत बड़े दुःख की बात है । इस पर हमको आपको और पूरे सदन को विचार करना चाहिये । इन शब्दों के साथ मैं पुनः अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ और आपसे आग्रह करता हूँ कि मेरी शोक संवेदनाओं को उनके परिवार तक पहुँचाने की कृपा करें ।

श्री संजय गर्ग–

माननीय अध्यक्ष जी, बहेड़ी से चुनकर आये सम्मानित साथी मरहूम मंजूर भाई के निधन पर शोक प्रकट करते हुये माननीय नेता सदन माननीय नेता प्रतिपक्ष माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस माननीय नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी, माननीय उप नेता भारतीय जनता पार्टी माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी, माननीय नेता जनता दल और माननीय नेता लोकतांत्रिक कांग्रेस तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो शोक संवेदना प्रकट की है उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ । मान्यवर, यह प्रकृति का नियम है कि इस विश्व में जो आया है एक दिन उसको जाना है परन्तु लोकतंत्र के सजग प्रहरी के रूप में विधान सभा का प्रतिनिधित्व करने वाले विधायक को राजभवन के सामने सुरक्षा के घेरे में, अहिंसात्मक प्रदर्शन करते हुये जिस तरह से उनकी बरबंरतापूर्ण हत्या की गयी उसकी जितनी भर्त्सना की जाय वह कम है । एक आम नागरिक से अलग हटकर विधायक की सुरक्षा राजभवन के सामने वी०आई०पी० सुरक्षा घेरे में हो गयी असामाजिक तत्वों द्वारा यह काम अंजाम दिया गया जो बहुत ही शर्मनाक है । माननीय मंजूर साहब तीसरी बार विधायक चुने गये थे । 1989 में एक निर्दलीय विधायक के रूप में वह चुनकर आये थे । हर दलित अल्पसंख्यक के सवाल को वह यहां उठाते थे । शोषितों के खिलाफ, शोषितों के हित में वह हमेशा अपनी आवाज उठाते रहे । हर शोषितों के हित में उनको द्वारा उठायी गयी आवाज को निश्चित रूप से यह सदन हमेशा याद रखेगा । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी दिवंगत आत्मा को

अपने चरणों में स्थान दे और उनके परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे। इसी के साथ मैं अपने दल की ओर से उनके प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि उनके शोक संतप्त परिवार को हमारी ओर से शोक संवेदना प्रेषित करने का कष्ट करें।

श्री महबूब अली–

माननीय अध्यक्ष महोदय, मंजूर अहमद साहब इस सदन के वरिष्ठ सदस्य रहे। स्वर्गीय मंजूर अहमद की हत्या के बारे में माननीय नेता, सदन, माननीय नेता, प्रतिपक्ष, माननीय नेता कांग्रेस माननीय नेता जनता दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो विचार रखे हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूँ। मैं इतना ही कहूँगा कि 1993 में इस सदन में मुझे भी उनके साथ सदस्य के रूप में बैठने का सौभाग्य हासिल हुआ। वह हमेशा गरीबों के लिये संघर्ष करते थे, उनकी हत्या से शायद बहेड़ी क्षेत्र की जनता को जो नुकसान हुआ है उसकी भरपाई होना मुश्किल है। मैं इस सदन के माध्यम से आपसे अनुरोध करता हूँ कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से उनके परिवार को शोक संवेदना भेजी जाए और पूरे सदन से दरखास्त है कि उनकी आत्मा की शान्ति के लिए अल्ला से दुआ करे कि उन्हें जन्नत नसीब हो।

डा० राधा मोहन दास अग्रवाल–

अध्यक्ष महोदय स्व० मंजूर अहमद की मृत्यु के बारे में मैं नेता प्रतिपक्ष मो० आजम खां के शब्दों को सुन रहा था। बोलते समय सिर्फ उनके मुँह से शब्द ही नहीं निकल रहे थे बल्कि उनके चेहरे से कहीं न कहीं समाजवादी पार्टी की भावना झलक रही थी। श्री मंजूर अहमद के निधन से सिर्फ सदन को ही हानि नहीं हुई है, पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था के ऊपर एक टिप्पणी हुई है। जैसा कि श्री प्रमोद जी ने कहा कि मौत तो आती है यह एक सच्चाई है कि वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि ग्रहणाति नशोपराणि तथा शरीराणि विहाय जिर्णानि इत्यानि संयति नवानि देही। अर्थात् जिस प्रकार से शरीर पुराने वस्त्र छोड़कर नए वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार यह आत्मा भी पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण करती है। लेकिन श्री मंजूर अहमद की मृत्यु से जो एक प्रश्न खड़ा हुआ है सुरक्षा व्यवस्था के बारे में उस पर विचार होना चाहिए। मेरा अनुरोध है कि अगला चुनाव जब होता है तो मैं व्यक्तिगत रूप से आग्रह करता हूं कि समाजवादी पार्टी उनके परिवार के किसी अन्य सदस्य को खड़ा करे।

श्री अध्यक्ष–

निधन के निदेश में यह सब नहीं ठीक है।

डा० राधा मोहन दास अग्रवाल–

मान्यवर, मेरे तथा मेरे दल की ओर से शोक संतप्त परिवार तक शोक संवेदना भेजने का कष्ट करें।

श्री दीनानाथ कुशवाहा–

अध्यक्ष महोदय नेता सदन नेता प्रतिपक्ष कांग्रेस पार्टी नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी नेता अपना दल नेता अखिल भारतीय हिन्दू महासभा व अन्य दलों के नेताओं ने जो शोक व्यक्त किया है कि उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुये मैं श्री मंजूर अहमद की हत्या पर गहरा दुःख व्यक्त करता हूँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार के लोगों को इतनी ताकत व सम्बल प्रदान करे कि वह इस दुःख व संकट के दौर को सहन कर सके। श्रीमन् मैं जहाँ से चुनकर आया हूँ वहां आज के ढाई हजार साल पहले सारी

दुनियां को शांति और अहिंसा का संदेश महात्मा गौतम बुद्ध ने दिया था । आज इस सदन में शान्ति और अहिंसा पर विश्वास रखने वाले लोगों से मैं आग्रह करता हूं कि राजभवन के गेट पर एक विधायक की हत्या होती है । उस समय सत्ता विधान मण्डल से नहीं राजभवन से संचालित हो रही थी । आज से चार सौ साल पहले गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि "जासु राज प्रियं प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी " । अर्थात् जिस राज्य में प्रजा दुःखी होती है वह राजा नरक का अधिकारी होती है । इस संकट की घड़ी में हम सभी संवेदना व्यक्त करने के लिए खड़े हैं । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि संकट की इस घड़ी में मंजूर अहमद के परिवार को इतनी ताकत प्रदान करे कि वह इस दुःख को सहन कर सकें । जय हिन्द ।

श्री अध्यक्ष–

उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए तीन बार निर्वाचित श्री मंजूर अहमद की दुःखद परिस्थितियों में 6 मार्च, 2002 को हत्या हो गई । यह हम सबके लिये शोक का विषय है । पहली बार श्री अहमद साहब 1989 में चुनकर आये थे, इस विधान सभा के सदस्य के रूप में, और मेरा उनका परिचय हुआ था । एक बहुत ही मिलनसार व्यक्ति के रूप में मैंने उनको देखा । कभी विश्राम के लिये इस लांबी या उस लांबी में जाते थे, उनका हंसमुख चेहरा, लोगों के साथ बात करने का सलीका, अपनी बातों से दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता ने अन्य लोगों के अन्दर उनके प्रति विशेष स्थान बना लिया था । अपनी इसी लोकप्रियता के कारण, जैसा कि माननीय नेता, सदन और नेता, प्रतिपक्ष ने कहा कि वे पुनः दूसरी बार इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । दुःख इस बात का है कि वे शपथ भी नहीं ले सके थे । जनता के प्रति उनकी जो सेवायें थीं, उत्तर प्रदेश विधान सभा की कार्यवाही में जो उनकी भागीदारी थी, उसको हम सब सदैव स्मरण करते रहेंगे । सामाजिक क्षेत्र में, अल्पसंख्यकों, दलितों के उत्थान के लिये उन्होंने बहुत कुछ किया उसी का नतीजा था कि बहेड़ी में लगातार जनता ने तीन दिन हड़ताल की । बरेली जनपद ने अच्छा समाजसेवी खो दिया है । मैं नेता सदन, नेता, प्रतिपक्ष और विभिन्न दलों के नेताओं ने उनके प्रति जो शोकोद्गार व्यक्त किये हैं, उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे । मैं आप सबकी तरफ से शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचा दूंगा । आपसे निवेदन करता हूं कि हम सब खड़े होकर दिवंगत आत्मा के प्रति दो मिनट का मौन रखें ।

(दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए ।)

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री मुराद लारी, श्री वेद प्रकाश, श्री शिव दर्शन, श्री श्री प्रकाश उर्फ ज्ञानू, श्री हरी किशन, श्री श्याम धर मिश्र, श्रीमती कैलाश पति, श्रीमती सिया दुलारी, श्री राघव राव पाण्डेय, श्री विष्णु देव, श्री भोला शंकर मौर्य, मंगल राम प्रेमी, श्री दौलत राम, श्री श्याम लाल चौधरी, श्री सरस्वती प्रताप सिंह, श्री विजय पाल सिंह, श्री फजलुर्रहमान अंसारी, श्री भगवान दीन कुशवाहा, श्री भगवान दीन, श्री भगौती सिंह, श्री रामेश्याम कपूर एवं श्री मोती लाल देहलवी के निधन पर शोकोद्गार

श्री अध्यक्ष–

जैसा हम सबको मालूम है कि पिछली विधान सभा में विधान सभा के पूर्व सदस्यों के निधन के विषय में, उनको श्रद्धांजलि देने के लिये एक प्रक्रिया का निर्धारण हुआ था कि उनके निधन की सूचना और उनके जीवन वृत्त के बारे में संक्षिप्त उल्लेख पीठ की ओर से कर दिया जाता है ।

28 सितम्बर, 2001 से लेकर 9 मई, 2002 तक इस सदन के 22 पूर्व सदस्यों का निधन हुआ। श्री मुराद लारी जो इस विधान सभा के सदस्य थे उनका 28 और 29 सितम्बर, 2001 की रात्रि में लखनऊ में निधन हो गया। वे 39 वर्ष के थे। श्री लारी 1996 में प्रथम बार सलेमपुर देवरिया से बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे बहुजन समाज पार्टी के एक निष्ठावान कार्यकर्ता थे। वे बहुजन समाज पार्टी के प्रान्तीय महासचिव थे। गरीबों के प्रति उनका विशेष लगाव था। अपनी कौम की सेवा में और समाज सेवा में उनकी बहुत रुचि थी। उनके निधन से जनपद देवरिया ने एक कुशल राजनीतिज्ञ और कर्मठ समाजसेवी खो दिया है।

श्री वेद प्रकाश उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य थे इनका 30 सितम्बर, 2001को लखनऊ में निधन हो गया। बहुत ही युवा आयु में 36 वर्ष की आयु में, इनका निधन हो गया। श्री वेद प्रकाश पहली बार वर्ष 1991 में निर्वाचन क्षेत्र नगर पूरब, जिला बस्ती से भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। तत्पश्चात् वह वर्ष 1996 में बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर पुनः विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वह बहुत ही मेहनती और जुझारु नेता थे। वह सदैव गरीब वर्ग के हितों के लिए संघर्ष करते थे। वह विधान सभा की 'विधान पुस्तकालय समिति' के 1997-98 तक सदस्य रहे। वेद प्रकाश जी, श्री राजनाथ सिंह मंत्रिमण्डल में होमगार्ड, नागरिक सुरक्षा एवं राजनीतिक पेंशन राज्यमंत्री के पद पर भी रहे। श्री वेद प्रकाश के निधन से जनपद बस्ती ने एक कुशल राजीनतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री शिवदर्शन का निधन 9 अक्टूबर, 2001 को उनके पैतृक गांव में हो गया। वह लगभग 59 वर्ष के थे। श्री शिव दर्शन का जन्म 20 जुलाई, 1942 को ग्राम जीगो, जिला रायबरेली में हुआ था। इन्होंने एम० ए०, बी० एड० तथा डी० एस० एन० सी० की शिक्षा ग्रहण की थी। श्री शिवदर्शन सर्वप्रथम वर्ष 1980 में निर्वाचन क्षेत्र बछरावां, जिला रायबरेली से कांग्रेस आई० के टिकट पर निर्वाचित होकर विधान सभा में आए थे, तत्पश्चात् वह वर्ष 1985, 1989 तथा 1991 में लगातार निर्वाचन क्षेत्र बछरावां जिला रायबरेली से विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे। यह एक कुशल नेता थे। राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेने के फलस्वरूप कई बार जेल जा चुके थे। वह श्री खिलाड़ी दास विद्यापीठ, हंसवापुर, बाराबंकी के उपाध्यक्ष तथा श्रीमती इंदिरा गांधी हरिजन विद्यापीठ, बछरावां, रायबेली के अध्यक्ष थे। जिला परिषद् रायबरेली के सदस्य भी रह चुके थे। भगवत भजन, सत्संग एवं समाजोत्थान के कार्यों में उनकी विशेष रुचि थी। श्री शिवदर्शन के निधन से जनपद रायबरेली ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री श्रीप्रकाश उर्फ ज्ञानू का 11 अक्टूबर, 2001 की रात्रि में निधन हो गया। वह लगभग 51 वर्ष के थे। श्री श्रीप्रकाश सर्वप्रथम वर्ष 1985 के सामान्य निर्वाचन में निर्वाचन क्षेत्र लालगंज जिला आजमगढ़ से जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे, तत्पश्चात् वे वर्ष 1989 में पुनः विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए। श्री श्रीप्रकाश ने छात्र जीवन से ही राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया था। यह वर्ष 1977–80 में युवक मंगल दल के अध्यक्ष रहे। वर्ष 1982 में ब्लाक लालगंज के ब्लाक प्रमुख के पद पर चुने गये, वर्ष 1984 में जेल भरो आन्दोलन में जेल गये। उन्होंने श्री सर्वेश्वरी समूह नेत्र चिकित्सालय कैथीशंकरपुर, आजमगढ़ का निर्माण कराया था। वह प्रत्येक वर्ष निःशुल्क आंखों के आपरेशन की व्यवस्था कराते थे। श्री श्रीप्रकाश के निधन से जनपद आजमगढ़ ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री हरीकिशन का 26 अक्टूबर, 2001 को हृदयगति रुकने से निधन हो गया। वह लगभग 71 वर्ष के थे। श्री हरीकिशन जी का जन्म 8 फरवरी, 1930 को ग्राम पिहनी मजबूत नगर, कानपुर देहात में हुआ था। उन्होंने बी० ए०, एल–एल० बी तक शिक्षा ग्रहण की थी। श्री हरीकिशन सर्वप्रथम जनता पार्टी के टिकट पर वर्ष 1977 में निर्वाचन क्षेत्र चौबेपुर, जिला कानपुर से जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे। तत्पश्चात् वह वर्ष 1980, 1989, 1993 तथा 1996 में भी विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे। वह उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य भी रहे। श्री हरीकिशन ने वकालत के पेशे से सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया था। वे श्री बनारसी दास मंत्रिमण्डल, सुश्री मायावती मंत्रीमण्डल तथा श्री कल्याण सिंह मंत्रीमण्डल में मंत्री रहे थे। वह 9 जनवरी, 1990 से 30 जुलाई 1991 तक विधान सभा अध्यक्ष पद पर भी रहे। वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद में नेता विरोधी दल भी रह चुके थे वे संगठन के महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके थे। राजनीति, समाजसेवा तथा पत्रकारिता में उनकी विशेष रुचि थी तथा अध्ययन एवं लेखन प्रिय था। श्री हरीकिशन के निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री श्यामधर मिश्र का 2 नवम्बर, 2001 को निधन हो गया। वे लगभग 83 वर्ष के थे। श्री श्यामधर मिश्र जी का जन्म 19 जुलाई 1918 को हुआ था, उन्होंने बी० ए०, एल–एल० बी० तक शिक्षा ग्रहण की थी। श्री मिश्र वर्ष 1977 में निर्वाचन क्षेत्र ज्ञानपुर, जिला वाराणसी से कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। 1950 से 1952 तक वह उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य रहे। वह लोकसभा तथा राज्य सभा के भी सदस्य रह चुके थे। काशी राज्य में जनतंत्र की स्थापना तथा काशी राज्य के भारत में विलय के प्रश्न को लेकर जो आन्दोलन चला उसे श्री श्यामधर मिश्र ने नेतृत्व प्रदान किया था। वे 1949 में बनारस राज्य सरकार में वित्त मंत्री के पद पर आसीन रहे थे। वे वर्ष 1959 से 1967 तक केन्द्रीय सरकार में सहकारिता, सिंचाई, कृषि तथा रक्षा उपमंत्री के पदों पर आसीन रहे। वह उत्तर प्रदेश कांग्रेस विधान मण्डल दल के नेता रह चुके थे। वे लोक लेखा समिति के सभापति भी रह चुके थे। आपसी संवाद में उनकी विशेष रुचि थी। श्री श्यामधर मिश्र के निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा की भूतपूर्व सदस्या श्रीमती कैलाश पती का 9 नवम्बर, 2001 को निधन हो गया। वे लगभग 58 वर्ष की थीं। श्रीमती कैलाश पती का जन्म मार्च, 1943 में लखनऊ में हुआ था। श्रीमती कैलाश पति वर्ष 1974 में निर्वाचन क्षेत्र मलिहाबाद, लखनऊ से कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा की सदस्या निर्वाचित हुयी थीं। वे लोक सभा तथा राज्य सभा की सदस्या भी रह चुकी थीं। श्रीमती कैलाश पती एक कर्मठ सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ता थीं। वे महिला युवा कांग्रेस, उत्तर प्रदेश की संयोजिका रह चुकी थीं। वे हरिजन सेवक संघ की सदस्या, परिगणित जाति सुधार एवं कल्याण पुनर्वास समिति, लखनऊ शाखा की कोषाध्यक्ष, डा० अम्बेदकर स्मारक निधि में कोषाध्यक्ष तथा महिला शिल्पकला केन्द्र, लखनऊ में संरक्षिका रह चुकी थीं। वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की संयुक्त सचिव तथा प्रदेश कांग्रेस की महामंत्री भी रह चुकी थीं। समाज सेवा के कार्यों में उनकी विशेष रुचि थी। श्रीमती कैलाश पती के निधन से जनपद लखनऊ ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेविका को खो दिया।

उत्तर प्रदेश विधान सभा की भूतपूर्व सदस्या श्रीमती सिया दुलारी का 16 नवम्बर, 2001 को लखनऊ में निधन हो गया। वे लगभग 70 वर्ष की थीं। श्रीमती सिया दुलारी सर्वप्रथम वर्ष 1957 में निर्वाचन क्षेत्र कर्वी, तत्कालीन जिला बांदा से कांग्रेस पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित

हुई थीं । तत्पश्चात् वे वर्ष 1962,69 तथा 89 में लगातार कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुई थीं । वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की सदस्य भी रही थीं । श्रीमती सिया दुलारी एक योग्य एवं कर्मठ महिला थीं । वे नगरपालिका बांदा की सदस्या, नजूल व सैनीटेशन कमेटी की चैयरमैन, कोआपरेटिव बैंक बांदा की डायरेक्टर तथा हरिजन एवं समाज कल्याण समिति की उपाध्यक्ष रहीं थीं । वे श्री चन्द्रभानु गुप्त मंत्रिमण्डल में वर्ष 1969-70 तक उप मंत्री रह चुकी थीं । वे विधान सभा की याचिका समिति की सभापति भी रहीं । समाज सेवा एवं अध्ययन में इनकी विशेष रुचि थी ।

श्रीमती सिया दुलारी के निधन से जनपद बांदा ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाज सेवी महिला को खो दिया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री राघवराम पाण्डेय का 22 नवम्बर, 2001 को निधन हो गया । वे लगभग 95 वर्ष के थे । श्री राघवराम पाण्डेय वर्ष 1957 में निर्वाचन क्षेत्र गोण्डा पूर्व, जिला गोण्डा से स्वतंत्र प्रोग्रेसिव विधान मण्डल दल के सदस्य के रूप में विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे । श्री राघवराम पाण्डेय जनपद गोण्डा के एक सम्मानित समाजसेवी थे । वे ग्राम कंसापुर के प्रधान तथा न्याय पंचायत राम नगर तरहर के सरपंच रहे थे । वे वर्ष 1982 तक ब्लाक प्रमुख झंझरी रहे थे । वे श्री गांधी विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, गोण्डा, भैया हरिभान दत्त इण्टर कालेज थानेपुर तथा सुभाष इण्टर कालेज उमरीबेगम गंज के अध्यक्ष थे । वे वर्ष 1982 से 2001 तक जिला सहकारी विकास संघ लिमिटेड गोण्डा के प्रशासक एवं अध्यक्ष रहे थे । श्री राघवराम पाण्डेय के निधन से जनपद गोण्डा ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

श्री विष्णु देव, भूतपूर्व सदस्य, उत्तर प्रदेश विधान सभा का 25 नवम्बर, 2001 को निधन हो गया । वे लगभग 81 वर्ष के थे । श्री विष्णुदेव वर्ष 1985 में निर्वाचन क्षेत्र नत्थूपुर, तत्कालीन जिला आजमगढ़ से जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे । श्री विष्णु देव एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । वे राष्ट्रीय आन्दोलनों तथा आपातकाल में अनेक बार जेल गये थे । वे राष्ट्र सेवा दल के कार्यकारी अध्यक्ष, डा० राम मनोहर लोहिया क० पा० पूर्व माध्यमिक विद्यालय, मधुबन के प्रबन्धक और जिला लोक कल्याण समिति के अध्यक्ष थे । वे अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड के सदस्य भी रहे थे । जन सेवा तथा जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने और संघर्ष करने में उनकी विशेष रुचि थी ।

श्री विष्णु देव के निधन से जनपद मऊ ने एक स्वतंत्रा संग्राम सेनानी, कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री भोला शंकर मौर्य का 7 दिसम्बर, 2001 को हृदय गति रुकने से निधन हो गया । वे लगभग 61 वर्ष के थे । श्री भोला शंकर मौर्य सर्वप्रथम वर्ष 1985 में निर्वाचन क्षेत्र बिलसी, जिला बदायूं से कांग्रेस (आई) के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। तत्पश्चात् वे वर्ष 1991 तथा उप चुनाव 1997 में पुनः विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए । श्री भोला शंकर मौर्य एक योग्य एवं कर्मठ नेता थे । वे सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण, सार्वजनिक निर्माण विभाग तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री रहे थे । वे वर्ष 1988-89 में विधान सभा की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम संयुक्त समिति तथा 1989-90 में प्रतिनिहित विधायन समिति के सभापति रहे थे । वे जिला कांग्रेस कमेटी, बदायूं के महामंत्री, जिला हरिजन एवं समाज कल्याण समिति, बदायूं के अध्यक्ष, जिला सहकारी बैंक लि० बदायूं के संचालक, उ० प्र० कांग्रेस कमेटी (ई) लखनऊ के महासचिव तथा बहुजन

समाज पार्टी, बरेली मण्डल के प्रभारी रह चुके थे । श्री भोला शंकर मौर्य के निधन से जनपद बदायूं ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री मंगल राम प्रेमी का 11 दिसम्बर, 2001 को निधन हो गया । वे लगभग 76 वर्ष के थे । श्री मंगल राम प्रेमी वर्ष 1977 में निर्वाचन क्षेत्र नगीना, जिला बिजनौर से जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे । वे तीन बार लोक सभा सदस्य भी निर्वाचित हुए थे । श्री मंगल राम प्रेमी स्कूल के दिनों से ही "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भाग लेने लगे थे । वे 1952 में अनुसूचित जाति परिसंघ के सदस्य थे । वे वर्ष 1960-64 में संगठन सचिव, अखिल भारतीय हरिजन कल्याण सभा तथा 1964 में इसके कोषाध्यक्ष थे । वे वर्ष 1964–69 में बाल्मीकि धर्मशाला निर्माण समिति, दारानगर गंज, बिजनौर के अध्यक्ष थे । भजन कीर्तन तथा चित्रकारी में उनकी विशेष अभिरुचि थी । श्री मंगल राम प्रेमी के निधन से जनपद बिजनौर ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री दौलत राम का 15 दिसम्बर, 2001 को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया । वे लगभग 72 वर्ष के थे । उनका जन्म 12 जुलाई, 1929 को सदरूद्दीन नगर, जिला बदायूं में हुआ था । उन्होंने एम० ए० तक शिक्षा ग्रहण की थी । श्री दौलत राम वर्ष 1989 के सामान्य निर्वाचन में निर्वाचन क्षेत्र बिल्सी, जिला बदायूं से जनता दल के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री दौलत राम भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त होने के पश्चात राजनीति में सक्रिय हुए थे । वे अम्बेडकर छात्रावास, बदायूं के अध्यक्ष तथा अनुसूचित जाति एवं जन जाति विकास परिषद के जिला अध्यक्ष रह चुके थे । वे श्री मुलायम सिंह यादव मंत्रिमण्डल में वन राज्य मंत्री थे । वे बाबा राम दास धर्मशाला कछला, बदायूं के सदस्य भी थे । समाज सेवा में उनकी विशेष रुचि थी । श्री दौलत राम के निधन से जनपद बदायूं ने एक कुशल प्रशासक एवं समाजसेवी खो दिया है ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री श्याम लाल चौधरी का 21 दिसम्बर, 2001 को निधन हो गया । वे लगभग 63 वर्ष के थे । श्री श्याम लाल चौधरी का जन्म 31 मई, 1938 को कोंच जिला जालौन में हुआ था । उन्होंने स्नातक एल–एल०बी० तक शिक्षा ग्रहण की थी । वे 1985 में निर्वाचन क्षेत्र कोंच, जिला जालौन से कांग्रेस आई के टिकट पर विधान सभा के सदस्य चुने गये । वे एक कर्मठ समाज सेवी थे । वे युवक कांग्रेस तहसील कोंच के संयोजक, नगरपालिका कोंच के सदस्य भारतीय हस्तकला बोर्ड के मनोनीत सदस्य, आल इण्डिया लेबर सब कमेटी के चेयरमैन तथा राष्ट्रीय, पुरस्कार उप समिति के सदस्य रह चुके थे । विधि, धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन, नये स्थलों तथा तीर्थ स्थलों के भ्रमण में इनकी विशेष रुचि थी, श्री श्याम लाल चौधरी के निधन से जनपद जालौन ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री सरस्वती प्रताप सिंह का 2 जनवरी, 2002 को निधन हो गया वे लगभग 61 वर्ष के थे । उनका जन्म 25 जनवरी, 1941 को ग्राम ईसा नगर, जिला लखीमपुर खीरी में हुआ था । वे स्नातक एवं विद्या विशारद थे । वे सर्वप्रथम 1974 में निर्वाचन क्षेत्र धौरहरा, जिला खीरी से निर्दलीय सदस्य के रूप में विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तत्पश्चात वे 1985 में पुनः निर्दलीय तथा वर्ष 1989 एवं 1996 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री सरस्वती प्रताप सिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक कुशल राजनेता थे । उन्होंने कांग्रेस द्वारा चलाये गये आंदोलनों में भाग लिया जिसके फलस्वरूप वे कई बार जेल भी गये । वे

सहकारी गन्ना समिति एटा के चार वर्षों तक अध्यक्ष रहे, वे श्री कल्याण सिंह मंत्रिमण्डल में होमगार्ड्स, राजनैतिक पेंशन एवं नागरिक सुरक्षा विभाग के मंत्री, श्री राम प्रकाश मंत्रिमण्डल एवं श्री राजनाथ सिंह मंत्रिमण्डल में लघु उद्योग मंत्री थे। वे विभिन्न शैक्षिक सामाजिक एवं खेल संस्थाओं से जुड़े थे। कृषि में इनकी विशेष रुचि थी तथा खेल व तैराकी प्रिय थे। श्री सरस्वती प्रताप सिंह के निधन से जनपद लखीमपुर खीरी ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य श्री विजय पाल सिंह का 4 जनवरी, 2002 को निधन हो गया है वे लगभग 76 वर्ष के थे। उनका जन्म 1926 में ग्राम भरियाडीह तत्कालीन जिला गोंडा में हुआ था। वे वर्ष 1969 तथा वर्ष 1974 में निर्वाचन क्षेत्र गैंसड़ी जिला गोंडा से जनसंघ के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे सदैव अपने क्षेत्र के विकास के लिए प्रयत्नशील रहते थे। वे उद्योग में विशेष रूचि रखते थे। श्री विजय पाल सिंह के निधन से जनपद बलरामपुर ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाज सेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री फजलुर्रहमान अंसारी का 7 जनवरी, 2002 को निधन हो गया वे लगभग 57 वर्ष के थे। उनका जन्म 21 फरवरी 1945 को ग्राम लोकाही जिला बहराइच में हुआ था। उन्होंने अदीब माहिर (इण्टरमीडिएट समकक्ष) की शिक्षा ग्रहण की थी। वे 1974 तथा 1977 में निर्वाचन क्षेत्र नानपारा जिला बहराइच से कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे मीसा तथा अन्य राजनीतिक आंदोलनों में भाग लेने के फलस्वरूप कई बार जेल गये थे। वे उत्तर प्रदेश राज्य कौंसिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी तथा उत्तर प्रदेश राज्य कौंसिल किसान सभा के सदस्य तथा उत्तर प्रदेश नवजवान सभा के उपाध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश नवजवान सभा जिला बहराइच के अध्यक्ष भी रह चुके थे। वे वर्ष 1993 में बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर भी विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे अनेक शिक्षा संस्थाओं की प्रबंध समिति के विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके थे। पत्रकारिता लेखन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनकी विशेष रुचि थी। उनका निधन होने से जनपद बहराइच ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाज सेवी खो दिया।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री भगवानदीन् कुशवाहा का 17 फरवरी 2002 को निधन हो गया। वे लगभग 61 वर्ष के थे। उनका जन्म 1941 में ग्राम सिठमरा, तत्कालीन जिला कानपुर में हुआ था। वे हाई स्कूल पास थे। वे सर्वप्रथम 1977 में निर्वाचन क्षेत्र डेरापुर, तत्कालीन जिला कानपुर से जनता दल के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। तत्पश्चात् वे वर्ष 1980, 1985 तथा 1989 में लगातार निर्वाचन क्षैत्र डेरापुर जिला कानपुर देहात से विधान सभा सदस्य, निर्वाचित हुए थे। श्री भवानदीन कुशवाहा एक व्यवहार कुशल एवं लोकप्रिय नेता थे आपातकाल के समय डी०आई०आर० के अंतर्गत लगभग 6 माह कानपुर कारागार में बंदी रहे। वे वर्ष 1974 में भारतीय लोक दल, कानपुर के कोषाध्यक्ष रहे थे। वे ग्राम सिठमरा के प्रधान भी रह चुके थे। उन्होंने कमेटियों में कई बार जिम्मेदार पदों पर कार्य किया था और भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन किया था। राजनीति, गरीबों, हरिजनों तथा कमजोर वर्ग के लोगों की सहायता करने में उनकी विशेष रूचि थी। श्री भगवानदीन कुशवाहा के निधन से जनपद कानपुर देहात ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाज सेवी खो दिया है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री भगवानदीन का 18 फरवरी, 2002 को लगभग 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री भगवान दीन सर्वप्रथम वर्ष 1946 में जिला कानपुर से विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे। तत्पश्चात् वे वर्ष 1952 में निर्वाचन क्षेत्र फतेहपुर (दक्षिण) जिला फतेहपुर से

कांग्रेस के टिकट पर पुनः विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे। वे वर्ष 1976 से 1982 तक राज्य सभा के सदस्य थे । वे संविधान सभा के सदस्य भी रह चुके थे । वे एक कुशल एवं कर्मठ सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता थे । समाज सेवा में उनकी रुचि थी । वे एक जाने माने राजनेता थे । उन्होंने बाद में लखनऊ जनपद को ही अपना कार्यक्षेत्र बना लिया था । उनके निधन से जनपद लखनऊ ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री भगौती सिंह का 5 मार्च, 2002 को प्रातः निधन हो गया । वे लगभग 87 वर्ष के थे । श्री सिंह वर्ष 1969 में निर्वाचन क्षेत्र कैसरगंज जिला बहराइच से कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री सिंह ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़कर चढ़कर भाग लिया था जिसके फलस्वरूप वे कई बार जेल गये थे । वे चीनी मिल मजदूर संघ, गन्ना विकास समिति तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके थे । वे जिला परिषद् के अध्यक्ष भी रह चुके थे । वे वर्ष 1970 में श्री चरण सिंह मंत्रिमंडल में उप मंत्री रहे थे । श्री भगौती सिंह के निधन से जनपद बहराइच ने एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री राधेश्याम कपूर का 21 मार्च, 2002 को निधन हो गया । वे लगभग 87 वर्ष के थे । श्री कपूर वर्ष 1967 में निर्वाचन क्षेत्र लखनऊ (पूर्व) से जनसंघ के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे । श्री राधेश्याम कपूर वर्ष 1938 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े थे । वे जम्मू सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेते हुये तीन बार जेल गये थे । वे वर्ष 1960 में नगरपालिका लखनऊ के सभासद चुने गये थे । वे वर्ष 1975 से 1977 तक इमरजेन्सी अवधि में जिला कारागार लखनऊ में बन्द थे । वे नगर जनसंघ लखनऊ के अध्यक्ष तथा राष्ट्र धर्म पत्रिका के संस्थापक सदस्य भी रह चुके थे । श्री राधेश्याम कपूर के निधन से जनपद लखनऊ ने कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री मोती लाल देहलवी का 9 मई 2002 को निधन हो गया । वे लगभग 75 वर्ष के थे । श्री मोती लाल देहलवी सर्वप्रथम वर्ष 1967 में निर्वाचन क्षेत्र बिल्हौर जिला कानपुर से संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे । तत्पश्चात् वे वर्ष 1969, 1974,1977,1980 तथा 1989 में विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे । श्री मोती लाल देहलवी ने "भारत छोड़ो आन्दोलन" तथा अन्य विभिन्न आन्दोलनों में भाग लिया था जिसके फलस्वरूप वे कई बार जेल गये थे । वे वर्ष 1946 से 1952 तक दिल्ली क्लाथ मिल में श्रमिक के रूप में कार्य कर चुके थे । वे वर्ष 1970–71 में राज्य मंत्री, सहकारिता के पद पर रह चुके थे । वे 1979–80 में यू०पी० स्टेट लेदर डेवलपमेंट एण्ड मार्केटिंग कारपोरेशन लिमिटेड, आगरा के चेयरमैन रहे थे । शोषण विहीन समाज की स्थापना में उनकी विशेष रुचि थी । श्री मोती लाल देहलवी के निधन से जनपद कानपुर ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया ।

यह हमारे सभी भूतपूर्व दिवंगत सदस्य अपने–अपने निर्वाचन क्षेत्रों में बहुत योगदान करते थे । विधान सभा के अभिलेखों में, उन्होंने जो विधान सभा में रहकर सेवा की , महत्वपूर्ण कार्य किये, उसका उल्लेख हम सबको मिल जाता है । हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को शांति दे और उनके परिवार को उनके निधन से हुई क्षति को सहने की शक्ति दे । आप सबकी ओर से शोक संवेदनायें उनके परिवारों तक पहुंचा दूँगा । आप सबसे अनुरोध है कि कृपया दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये 2 मिनट खड़े होकर हम मौन धारण करें ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े रहे)

श्री अध्यक्ष–

कृपया अपना–अपना स्थान ग्रहण करें ।

वर्तमान लोक सभा के अध्यक्ष श्री जी०एम०सी० बालयोगी के निधन पर शोकोद्गार ...

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह की पत्नी श्रीमती ज्ञान कौर, पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी (भू०पू० सदस्य विधान सभा), एवं पूर्व उप प्रधान मंत्री श्री जगजीवन राम की पत्नी श्रीमती इन्द्राणी देवी के निधन पर तथा गुजरात के दंगों में मारे गये निर्दोष व्यक्तियों के प्रति शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री जी०एम०सी० बालयोगी जनता की सबसे बड़ी अदालत पार्लियामेंट में लोक सभा के अभी कुछ दिनों पहले तक अध्यक्ष पद पर आसीन रहे थे । आज यह हमारे बीच नहीं रहे हैं क्योंकि हेलीकाप्टर से दुर्घटना होने के कारण इनका अपने ही क्षेत्र में 3 मार्च को देहान्त हो गया था । यह आन्ध्र प्रदेश के रहने वाले थे और कई बार लोक सभा में चुनकर आये, लगातार दो बार लोक सभा में अध्यक्ष पद पर विराजमान रहे । आन्ध्र प्रदेश में यह असेम्बली के लिये भी चुने गये थे और आन्ध्र प्रदेश की सरकार में यह मिनिस्टर भी रहे और यह सबसे पहले दलित वर्ग के भारत में एक ऐसे व्यक्तित्व थे जो देश के सर्वोच्च पद पर (अध्यक्ष पद पर) आसीन हुए । यह एक अच्छे सामाजिक नेता थे, विभिन्न क्षेत्रों में इनका सामाजिक पहलुओं को लेकर सराहनीय योगदान रहा । यह एक कुशल राजनीतिज्ञ भी थे और काफी विद्वान थे । इनके निधन पर मैं पूरे सदन की ओर से अपनी ओर से, अपने दल की ओर से गहरा दुःख प्रकट करते हुए कुदरत से यह प्रार्थना करती हूँ कि कुदरत इनके परिवार को सुख और शान्ति प्रदान करे ।

माननीय अध्यक्ष जी, इनके अतिरिक्त मैं आपकी आज्ञा से स्व० जगजीवन राम जी, स्व० चौधरी चरण सिंह जी तथा स्व० ज्ञानी जैल सिंह जी जिस मकसद को लेकर वे क्षेत्र में कूदे और उन्हें जो कामयाबी मिली उसमें इनकी धर्म–पत्नियों का सराहनीय योगदान रहा । स्व० श्री जगजीवन राम जी की पत्नी का देहान्त इसी साल 14 अप्रैल, को हुआ, स्व० श्री चौधरी चरण सिंह जी की धर्मपत्नी का देहान्त इसी महीने 10 मई को हुआ, स्व० श्री ज्ञानी जेल सिंह जी की पत्नी का देहान्त इसी महीने में 11 मई को हुआ । इनके निधन पर भी मैं अपने सदन की ओर से, अपने दल की ओर से गहरा दुःख प्रकट करती हूँ । इसी के साथ ही माननीय अध्यक्ष जी, गुजरात में पिछले कुछ दिनों में किन्हीं कारणों से जो दंगों में हिन्दू, मुस्लिम व अन्य सम्प्रदाय के व्यक्ति मारे गये, बेकसूर मारे गये उनके लिए भी मैं पूरे सदन की ओर से, अपनी ओर से अपने दल की ओर से गहरा दुःख प्रकट करती हूं तथा कुदरत से यह प्रार्थना करती हूं कि कुदरत उनके परिवार को सुख और शान्ति प्रदान करे ।

नेता विरोधी दल (श्री मोहम्मद आजम खां)–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री गन्ती मोहन चन्द बालयोगी जी का 3 मार्च 2002 को एक हेलीकाप्टर दुर्घटना में (अपने ही क्षेत्र में एक पेड़ से टकराकर हेलीकाप्टर क्षतिग्रस्त हुआ) देहान्त हो गया । इधर गुजरे हुए कुछ महीनों में एक साल के अन्दर कई बड़े नेता इस तरह के हादसो के शिकार हुए । कांग्रेस के दो बड़े नेता एक सड़क हादसे में और एक हेलीकाप्टर हादसे में । इसी के साथ साथ देश के बाहर भी

कई हादसे इस तरह के हुए हैं और यह बड़ी अजीब सी बात है कि कई बड़े नेताओं की मौत उनका निधन तरक्की की उड़ान को लेकर और तेज रफ्तार को लेकर हुआ है।

मुझे यह सौभाग्य रहा है राज्य सभा का सदस्य होने की वजह से स्वर्गीय बालयोगी जी के साथ बैठने, उनसे मिलने, बात करने और यहां तक कि कभी-कभी देश के बाहर उनके साथ जाने का भी मौका मिला है। अच्छे लोग मिलते हैं जिन्दगी में बुरे लोग भी मिलते हैं बड़े छोटे मिलते हैं लेकिन किसी के बड़े होने के पीछे जरूर कोई वजह होती है। बालयोगी जी एक आम साधारण परिवार के व्यक्ति थे वह विधान सभा के सदस्य हुए, उच्च शिक्षा के मंत्री हुए तेलगूदेशम पार्टी से, उसके बाद लगातार एक ही क्षेत्र से तीन बार लोक सभा के सदस्य हुए और दो बार लोक सभा अध्यक्ष की गद्दी पर बैठे। जो काबिले जिक्र बात है वह यह है कि लोक सभा बेशुमार पार्टियों की मजमुआ रही है। पिछले कई साल से छोटे बड़े दलों ने मिलकर सरकार चलाई है। एक मल्टी डायमेन्शनल थिन्किंग एप्रोच में अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठकर एक कामयाब अध्यक्ष रहना, सब के मन को जीत लेना अपनी कामयाबी अपने बड़प्पन से सदन के हंगामों को काबू में कर लेना और सब का प्रिय रहना यह बालयोगी जी की शख्सियत का सबसे अहम पहलू रहा था। वह ईराक हमारे साथ गये थे और बड़े खुश रहे। कई दिन रहने के बाद ज़ब उनकी सद्दाम हुसैन से मुलाकात नहीं हो सकी तो वह बहुत दुःखी हुए। एक रोज उन्होंने कहा कि अगर हमारी मुलाकात शेर से नहीं हुई तो हम समझेंगे कि हमारा जंगल में रहने का कोई फायदा नहीं है शायद यह उनकी सबसे कीमती ख्वाहिश थी। आखिर बालयोगी की सद्दाम हुसैन से मुलाकात हुई और जब वह वापिस आये तो बहुत खुश थे। उनके निधन से खला ही नहीं है बल्कि ऐसे लोग कितने दिन बाद होंगे कहा नहीं जा सकता कहा यह जाता है कि कभी कोई शख्सियत 100 साल से पहले पैदा नहीं होती। बापू के बाद बड़ी जरूरत है एक बापू की लेकिन हिन्दुस्तान एक बापू नहीं पैदा कर सका। शिक्षा के क्षेत्र में आप अच्छी तरह से वाकिफ हैं जहां से आप आते हैं वहां भी पैदा होने वाली शख्सियतें दुबारा पैदा नहीं हो सकी। इतने अर्से बाद दूसरे बापू पैदा नही हो सके। सर सैय्यद अहम खां अक्लियत में और दूसरे मदन मोहन मालवीय अकुसरियतों तवके में दूसरे पैदा न हो सके। इस तरह से लगता यह है कि बालयोगी जी जैसी शख्सियत बहुत दिनों तक हमारे समाज को मयस्सर नहीं हो सकेगीं। उनके निधन से बड़ा नुकसान हुआ है। मैं अपनी तरफ से अपने दल की तरफ से सभी साथियों की तरफ से गम की सम्वेदनाएं उनके परिवार को भेजना चाहता हूं आपके माध्यम से। इसी के साथ "गुजर ही जायेगी तेरे बगैर भी लेकिन बड़ी उदास, बड़ी बेकरार गुजरेगी। ऐसी ही कुछ शख्सियत थी बालयोगी जी की।

इसी के साथ और एक सिलसिला हुआ है। जाहिर है किसी बड़ी शख्सियत के पीछे उसकी पत्नी का हाथ होता है, उसके भविष्य में, सोच में और तरक्की में, इसी सिलसिले में आज जिन महिलाओं का तजकिरा हुआ है, उन्होंने भी समाज जो कुछ दिया है। मैं अपने दल की तरफ से, सभी विरोधी दलों की ओर से अपनी संवेदनायें आपके माध्यम से भेजने का निवेदन करूंगा।

इसी के साथ यह भी कहना चाहूंगा कि आज पूरी दुनिया बारूद के ढेर पर खड़ी है, हम भी उसकी चपेट में नहीं बच पाये हैं। इंसान कहना तो बहुत दूर की बात, आज तो इस चार हाथ पैर वाले व्यक्ति को, जिस्म को लज्जा आती है। सुना है और साइंस भी कहती है कि पशु भी अपनी नस्ल के पशु को नहीं मारता, लेकिन अपने आपको सबसे बड़ा इंसान होने का दावा करने वालों ने इंसानियत के सिर को झुका दिया, जहां का जिक्र हुआ है, गुजरात का। अकेले गुजरात ही नहीं, जहां कहीं पर दहशत के नाम पर कोई मारा जाता है, मैं तो धर्म के आधार पर मुसलमान हूं और हमारा मजहब कहता है कि

अगर एक इंसान बेगुनाह मारा जाता है तो वह एक इन्सान की क्षति नहीं बल्कि पूरी आलमी इंसानियत का कत्ल है। इसी तरह यदि कोई किसी इन्सान को बचा लेता है तो एक वह एक इंसान को नहीं, बल्कि पूरी आलमी इंसानियत को कत्ल से बचा लेता है। मगर कहां नहीं जा सकता, क्या हुआ, हो इतना जरूर हुआ है कि हमारी इंसान विरादरी का सिर दुनिया को तो जांने दीजिए, हम अपने आपसे ही इतने शर्मिन्दा हैं कि आज सिर नहीं उठा सकते। इसलिए गुजरात का दर्दनाक सालेहा बिल्कुल धर्म से हटकर है, अगर इसे ऊपर से देखें तो हमें अपनी ही लाश के नीचे जली और कटी हुई लाशें मिलेंगी। इसकी निन्दा करने से कुछ होने वाला नहीं है। शब्दों की निन्दा से मसलों का हल नहीं होता। कितनी ही हुई, लेकिन उनका फैसला मैदाने जंग में नहीं हुआ, बल्कि मेज पर बैठकर शान्ति के साथ हुआ है। इस जलती हुई समस्या का फैसला भी मेज पर ही होना चाहिए कभी आग से आग और पानी से पानी को नहीं रोका जा सकता। आग बुझाने के लिए पानी की जरूरत है, ठंडक की जरूरत है। मैं उन तमाम लोगों को, जो बरबाद किये गये हैं, अपनी तरफ से, अपने दल की ओर से और पूरे विपक्ष की तरफ से अपनी इन्सानी हमदर्दी और श्रद्धांजलि पेश करता हूं और आपसे गुजारिश करूंगा कि इस बार ऐसे शब्द लिखकर भेजें, जिससे हम लोगों को भी कुछ सीख मिले।

आवास एवं नगर विकास मंत्री (श्री लालजी टण्डन)–

मान्यवर, मैं माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल की भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करते हुए बालयोगी जी को अपने दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं अभी भी मान्यवर, कहीं-कहीं हमारे लोकतंत्र के असली स्वरूप के दर्शन होते हैं और वह कुछ पद हैं जो निर्विवाद रहते हैं। मान्यवर, जिस आसन पर आप बैठे हैं, ऐसे ही संसद में वहां के आसन पर बैठने वालों की एक श्रृंखला है, जिन्होंने सारी दुनिया को भारत के लोकतंत्र से परिचय कराया है। उस श्रृंखला की जो ताजी कड़ी थी, वे बालयोगी जी थे। एक-दो बार उनसे परिचय होने का अवसर आया। मैं समझता हूं कि उनका नाम और उनके गुण एक ही थे। बालयोगी जी यद्यपि छोटे से कद के थे लेकिन वास्तव में एक कर्मयोगी के रूप में और भारत जैसे बहुदलीय संसद, उसमें सबका दिल जीत लेना, यह आसान बात नहीं है। उनके द्वारा समय-समय पर जो रूलिंग दी गयी हैं, वह इतिहास की धरोहर रहेंगी। उनके निधन पर सारा देश दुखी है और उससे यह सदन भी अछूता नहीं है। मैं अपने दल की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मान्यवर, जिन महापुरुषों की पत्नियों का यहां जिक्र हुआ है, उसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने राजनीति में न केवल एक राजनेता की पत्नी के रूप में बल्कि एक सफल जीवन संगिनी का धर्म भी निभाया है। उनके निधन पर हम सब दुखी हैं और उन्हें भी श्रद्धांजलि देते हैं।

मान्यवर, मैं नेता विरोधी दल की इस बात से, नेता सदन की इस बात से कि गुजरात में जो निर्दोष लोग मारे गये हैं, वास्तव में हमारी मानवता की हत्या की प्रवृत्ति जो लोगों में चल रही है, यह उसका प्रतीक है। मरने वालों का कोई मजहब नहीं होता है और न इस दृष्टि से देखना चाहिए। आज भारत के लोकतंत्र के सामने एक चुनौती है कि क्या हम सर्व धर्म समभाव को इस देश में जीवित रखना चाहते हैं और क्या हम सब लोगों ने अपना दायित्व निभाया है ? मान्यवर, यह सदन आपके निर्देशन में चलता है यदि आप ही किसी एक तरफ हो जायें तो उस दिन इसकी गरिमा गिर जायेगी। इसी तरह से जब निरीह मानवता पर हमला होता है और उसे यदि हम पक्षपातपूर्ण तरीके से देखते हैं या देखने की कोशिश करते हैं तो उस दिन वह मानवता मर जाती है। जो निर्दोष लोग मारे गये हैं, ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे और राष्ट्र को एक

चिन्तन की शक्ति दे जो पीरों और फकीरों ने राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए हमें दिया है। इन शब्दों के साथ जो मृत हुए हैं उन सबके प्रति अपनी संवेदनायें व्यक्त करता हूं और उन्हें श्रद्धांजलि देता हूं और ईश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करता हूं।

श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष जी, आदरणीय स्वर्गीय श्री जी० एम० सी० बालयोगी जी के निधन पर जो विचार माननीया नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय उप नेता, भारतीय जनता पार्टी ने प्रकट किये हैं। मैं भी उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, बालयोगी जी को राजनीति में आते हुए और शिखर पर पहुंचते हुए हम सभी ने देखा है। एक साधारण परिवार में, दलित परिवार में जन्म लेकर अपनी महानता से वह लोकसभा के सर्वोच्च आसन पर आसीन हुए। सबसे कम उम्र में स्पीकर होने का गौरव भी उन्हें मिला। मान्यवर, बाजपेयी सरकार जब विश्वासमत हासिल कर रही थी तब उन्हें एक निर्णय लेना था। वह निर्णय था कि उड़ीसा के मुख्य मंत्री जी सदन में मतदान कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं। मान्यवर, बड़ी लम्बी चर्चा हुई, तमाम बातें कही गयीं पर उन्होंने सहज भाव से जो नियमावली में था, जो पूर्व परम्परा थी उसके अनुसार उन्होंने उड़ीसा के मुख्य मंत्री जी को मतदान करने की अनुमति प्रदान की और उस एक मत ने लोक सभा में सरकार द्वारा रखे गये विश्वास मत प्रस्ताव को पारित नहीं होने दिया। वह उनकी योग्यता की मिसाल थी। मान्यवर, इन्ही शब्दों के साथ बालयोगी जी के निधन पर मैं अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि हमारी संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचा दे।

मान्यवर, इसके साथ ही नेता सदन ने जिन तीन महान विभूतियों की पत्नियों के प्रति शोक व्यक्त किया उनसे मैं अपने को जोड़ता हूं और यह उस कहावत को भी चरितार्थ करती हैं कि प्रत्येक सफल पुरुष के पीछे कोई न कोई नारी होती है। इसी के चलते गांधी जी, स्वर्गीय जगजीवन राम जी आदि अनेक महापुरुष अपने कर्तव्यों का पालन कर पाये। तो मैं अपने और अपने दल की ओर से उन भावनाओं को सम्बद्ध करता हूं जो बाबू जगजीवन राम, चौधरी चरण सिंह और ज्ञानी जैल सिंह की स्वर्गीय धर्मपत्नियों के प्रति व्यक्त की गई हैं।

मान्यवर, गुजरात में तीन महीनों से हत्याएं करने का सिलसिला जारी है मान्यवर, हम किसी को जानते नहीं हैं, पहचानते नहीं हैं, हम सब उनकी हत्या इसलिए कर देते हैं कि वह हिन्दू हैं या मुसलमान है। इसकी वजह से आज हमारा लोकतंत्र कहीं न कहीं खतरे में पड़ गया है और यह घटना रोकी जा सकती थी। इस साम्प्रदायिक दंगे में माताओं के पेट में उनकी कोख में पलने वाले बच्चों को निकाल दिया गया और छोटी-छोटी 12-12 साल की बच्चियों के साथ सड़कों पर बलात्कार किया गया।

श्री अध्यक्ष–

आप विषय से हट कर बोल रहे हैं आप केवल संवेदनायें प्रकट कीजिए।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं ऐसा कुछ नहीं कह रहा हूं। मुझे अपनी भावनाएं प्रकट करने दें और जो संसदीय बात है वह तो मुझे कहने दें। मान्यवर, गुजरात की घटना मानवता के नाम पर कलंक है।

(व्यवधान)

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, जब गुजरात में भूकम्प आता है तो हमें अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है। मान्यवर, मैं नहीं समझता हूं कि [× × ×] मान्यवर, मैं बहुत विनम्रता के साथ कहना चाहता हूं कि गुजरात का प्रकरण मैंने नहीं उठाया है। गुजरात का प्रकरण नेता सदन ने उठा दिया है और उस पर हमें भी कुछ कहने का अधिकार है। [× × ×]

श्री लालजी टण्डन–

मान्यवर, चर्चा नहीं हो रही है। जो परम्परा है उसके अनुसार संवेदना व्यक्त करनी चाहिए। जब कोई इस पर प्रस्ताव आयेगा तब चर्चा करेंगे।

श्री अध्यक्ष–

चर्चा आपके अधिकार में नहीं है।

श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष जी, आप खड़े हुए, मैं बैठ गया। लेकिन माननीय मंत्री जी अगर व्यवधान पैदा करेंगे तो कोई मंत्री नहीं बोलने पायेगा।

श्री लालजी टण्डन–

शोक-संवेदना में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, उसके कारणों में नहीं जाते।

श्री अध्यक्ष–

माननीय प्रमोद कुमार जी, अन्तिम बात जो शोक संवेदना से संबंधित है उसको रखिये।

श्री प्रमोद कुमार–

गुजरात में जो कुछ हुआ है, दुःखद है, दुर्भाग्यपूर्ण है, लोकतंत्र पर कलंक है। लोग चेहरा दिखाने लायक नहीं रह गये हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं यह भारत के प्रधान मंत्री कह रहे हैं। उन्होंने ठीक ही कहा है कि अब हम दुनिया में चेहरा दिखाने लायक नहीं रह गये हैं।

(सत्तापक्ष एवं विपक्ष के अनेक सदस्यों द्वारा एक साथ बोलने पर शोर/व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

कृपया आप लोग बैठिये।

श्री जगदम्बिका पाल–

माननीय अध्यक्ष जी.....

श्री अध्यक्ष–

पाल जी आप पुराने सदस्य हैं जब अध्यक्ष की पीठ पर कोई बैठा हुआ व्यक्ति खड़ा हो जाता है तो माननीय सदस्यगण बैठ जाते हैं। हमारे जो नये माननीय सदस्य चुनकर आये हैं उनको भी जानना

नोट :—[× × ×] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

चाहिए कि अगर अध्यक्ष पीठ पर जो भी बैठा रहता है, खड़ा हो जाता है तो सभी माननीय सदस्य बैठ जाते हैं और चुपचाप रहते हैं।

श्री मोहम्मद आजम खां–

अध्यक्ष जी, हालात आपके सामने हुए इसका दोष विपक्ष पर नहीं है। आपकी पीठ से कण्डोलेंसेस के लिए नाम आये थे उसको आगे बढ़ाते हुए नेता सदन ने यह जरूरी समझा कि कुछ ऐसे हादसे जो बहुत ऐतिहासिक हैं उनमें भी इस सदन के जज्बात की शिरकत हो। गम का इजहार करने के बहुत से तरीके हैं, कुछ आंसू बहाकर ग़म बरदाश्त कर लेते हैं, कुछ है कि अपनी आवाज को नहीं रोक पाते। अगर यह गम के इज़हार में अपनी आवाज को नहीं रोक पाये तो फिर क्या [× × ×] काम सदन में होगा और यही असल कारण है कि गुजरात की जलती हुई आग अभी तक बुझी नहीं है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि अगर यहां शांति नहीं हुई तो वहां भी नहीं होगी।

(प्रमोद कुमार के खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष–

अब शान्ति हो गयी है। माननीय प्रमोद कुमार जी समाप्त करिये। कोई ऐसी बात न कहिये जिससे उत्तेजना फैले। यह अवसर नहीं है ऐसी बातें कहने का।

श्री प्रमोद कुमार–

मैंने आज तक कभी ऐसी बात नहीं कही जिससे सदन में उत्तेजना फैले। मान्यवर, माननीय नेता सदन ने जो भावनायें व्यक्त कीं, उन्होंने उचित समझा एक महिला होने के नाते उनका दुख-दर्द निकल कर आया और उसी पीड़ा के चलते मैंने कुछ कहा। आज वहां सड़कों पर [xxx] होते हैं।

श्री अध्यक्ष–

आपने फिर पीठ के निर्देश का पालन नहीं किया। आप शोक की बात करें, केवल शोक संवेदना प्रकट करें।

(शोर)

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि वहां पर एक हजार से ज्यादा हत्यायें हुयीं हैं। सदन की एक परम्परा रही है कि किसी दैवी राष्ट्रीय आपदा के अवसर पर, मानव निर्मित आपदा के अवसर पर सम्पूर्ण सदन एक प्रस्ताव पारित करता है। मैं आग्रह करुंगा कि गुजरात के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव माननीय नेता सदन प्रस्तुत करें या माननीय नेता विरोधी दल प्रस्तुत करें ताकि उस पर हम सबकी संवेदनायें आ जायं। मैं तो यह भी कहूंगा कि वहां राहत शिविर चल रहे हैं, अगर उत्तर प्रदेश सरकार अपनी ओर से आर्थिक सहायता दे तो यह एक अच्छा कदम होगा, मानवीय कदम होगा। जब ऐसा अवसर आता है तो कहीं न कहीं दुख बाहर आ जाता है। आज तीन महीने से चलने वाली घटनाओं के पीछे कहीं न कहीं कोई लापरवाही है उस पर ध्यान देना चाहिये जिससे उत्तर प्रदेश में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

नोट :—[× × ×] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री अध्यक्ष–

आप अपनी बात का विस्तार कर रहे हैं।

श्री प्रमोद कुमार–

मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि गुजरात की घटनाओं से सबक लेना चाहिये और ऐसी घटनाओं पर रोक लगानी चाहिये। मेरे विचार से, मैं मानता हूं कि गुजरात में जो घटनायें हो रही हैं वह संप्रदायिक दलों के इशारे पर हो रही हैं, मैं इल्जाम लगाना चाहता हूं [xxx]।

(शोर)

एक मा० सदस्य–

माननीय प्रमोद जी आरोप लगा रहे हैं। ऐसी बातें नहीं कहना चाहिये।

श्री अध्यक्ष–

यह लिखा नहीं जायेगा। (शोर)

श्री आलम बदी–

[× × ×] (शोर)

श्री अध्यक्ष–

यह लिखा नहीं जायगा। मैं किसी को अनुमति नहीं दे रहा हूं।

सदन में मर्यादित परम्पराओं के पालन का अनुरोध श्री जगदम्बिका पाल का निष्कासन तथा उनके निष्कासन की वापसी

सिंचाई, गन्ना विकास, उच्च शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, भाषा, राष्ट्रीय एकीकरण, कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्री (श्री ओम प्रकाश सिंह)–

मान्यवर, मुझे इस सदन की परम्परायें एक बहुत लम्बे समय तक देखने को मिली हैं। अपने देश के एक बहुत ही बड़े महापुरूष की अल्पकाल में हुयी मृत्यु के संबंध में संवेदना व्यक्त की जा रही है और दूसरी जगह जो घटनायें मानवता के विरुद्ध हुयीं उसके प्रति संवेदना व्यक्त की जा रही है। लेकिन सदन का जो प्रस्ताव है उसके कुछ विपरीत यहां पर कार्य हुआ है। मैं केवल इतना ही आग्रह करूंगा कि आज उन मर्यादित परम्पराओं के विरुद्ध कुछ घटनाओं का जिक्र करते हुये कुछ बातें कहीं गयीं, अगर वह प्रोसीडिंग का अंग बनी रहीं तो एक गलत परम्परा पड़ जायगी। भावनाएं हों, लेकिन स्वस्थ परम्पराएं भी हों। जो शोक संवेदनाएं प्रकट की गई हैं उनमें जहां कहीं इस परम्परा का उल्लंघन हुआ हो वह कार्यवाही का अंग न बने।

श्री अध्यक्ष–

मैं देख लेता हूं।

नोट :—[× × ×] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री जगदम्बिका पाल–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री अध्यक्ष–

मैं इसकी अनुमति नहीं दूंगा । अब कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं ।

श्री जगदम्बिका पाल–

मैं इस सदन का पुराना सदस्य हूं ।

श्री अध्यक्ष–

आपको बोलने की बीमारी पुरानी है । कुछ नहीं लिखा जा रहा है । कृपया बैठ जाएं ।

(श्री जगदम्बिका पाल के अपना आसन न ग्रहण करने पर ।)

श्री अध्यक्ष–

कृपया बैठ जाएं ।

श्री जगदम्बिका पाल–

मेरे भी इस सदन का सदस्य होने के नाते कुछ अधिकार हैं । आपने ओम प्रकाश सिंह जी को तो अनुमति दे दी ।

श्री अध्यक्ष–

आप कृपया बैठ जाएं । अपने बारे में किसी भ्रम में मत रहिएं ।

श्री जगदम्बिका पाल–

मैं इस सदन का सदस्य हूं ।

श्री अध्यक्ष–

आप इस सदन का त्याग कर दीजिए ।

(श्री जगदम्बिका पाल द्वारा सदन का त्यागने पर)

श्री अध्यक्ष–

मैं निर्देश दे रहा हूं कि आप सदन त्याग दीजिए । जब तक इस आदेश का अनुपालन नहीं होगा अग्रिम कार्यवाही नहीं होगी ।

(अनेक सदस्यों के एक साथ बोलने पर व्यवधान इसी मध्य श्री जगदम्बिका पाल सदन त्यागकर चले गए)

नेता विरोधी दल (श्री मो० आजम खां)–

मान्यवर, आपको कष्ट हुआ है लेकिन जहां आप बैठे हैं यहां आपको बहुत बरदाश्त करना होगा ।

(श्री अम्बिका चौधरी के खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष–

अम्बिका जी आपके नेता खड़े हैं। वह सक्षम हैं आप कृपया बैठ जाएं।

श्री मो० आजम खां–

सदन का माहौल बहुत गम्भीर है, शोक में डूबा हुआ है आप जहां बैठे हुए हैं वहां आप हम सबसे ऊपर हैं। आपकी बरदाश्त हम सबसे ऊपर है। इन्हीं वजहों से आप ऊपर बैठे हैं। हो सकता है कि हमसे कुछ गलत बात निकल जाए जो आपकी शान के खिलाफ हो उसे आपको बरदाश्त करना पड़ेगा तभी तो आप हमारे संरक्षक हैं। अगर आप बरर्दाश्त न कर सके तो फिर सदन की कार्यवाही प्रभावित होगी। मेरी आपसे दरखास्त है कि आप पाल जी को सदन में बुला लीजिए।

श्री अध्यक्ष–

नेता प्रतिपक्ष मैं मन में विकार नहीं रखता। मैं तीन बार खड़ा हुआ...

लेकिन माननीय सदस्य फिर भी खड़े रहे। जो हमारी संसदीय परम्परा प्रारम्भिक शिष्टाचार है उसका अनुपालन होना चाहिए। मैं कह रहा हूं, फिर कह रहा हूं। तीन-चार बार कह चुका हूं फिर भी नहीं सुन रहे हैं। जिस तरह की अपेक्षा पीठ से करते हैं यदि उसी तरह से माननीय सदस्य भी आचरण करें तो कोई कटुता नहीं आयेगी। पाल जी को वापस बुला लीजिये।

आवास एवं नगर विकास मंत्री (श्री लालजी टण्डन)–

मैं इस बात का समर्थन करता हूं कि उनको वापस बुला लिया जाय लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष–

पीठ की ओर से कोई आदेश हो तो उसका अनुपालन होना चाहिए।

(श्री जगदम्बिका पाल जी ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया)

श्री राम नरेश यादव–

मान्यवर, मैं सबसे पहले तो कुछ कहने से पहले यह कहना चाहता हूं कि चूंकि उस पीठ की गरिमा है और इस सदन की भी गरिमा है। आपने जो उदारता का परिचय देकर कि अभी आपने माननीय पाल जी को सदन त्यागने का निर्देश दिया और उसके बाद आपने उनको पुनः सदन में वापस बुलाकर, इस पीठ की रक्षा की है और सदन की गरिमा की भी रक्षा की है। मैं इसलिये कह रहा था कि अभी हमारे माननीय सदस्य ओम प्रकाश जी खड़े हो गये थे कुछ कहना शुरू किया था नेता कांग्रेस के बयान पर। मैं कहना चाहता हूं कि सम्मानित नेता सदन ने उस प्रसंग को गम्भीरता के साथ लिया और सदन ने भी, मैं समझता हूं कि इसको गम्भीरता के साथ लिया है और जब सदन ने इसको गम्भीरता के साथ लिया है और जब इस प्रसंग पर इस देश के प्रधानमंत्री जिन्होंने कि वहां पर जाकर अपना वक्तव्य दिया था कि शर्म से माथा झुक जाता है, किस मुंह को लेकर मैं विदेश जाऊंगा। मान्यवर, इससे मालूम होता है कि वहां पर उस समय मानवता कराह रही थी, वहां पर जो घटनाएं हुई हैं उन पर दृष्टिपात किया जा सकता है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि माननीय प्रमोद कुमार जी ने जो अपनी बात कही है उसमें कहीं कोई असंसदीय भाषा का प्रयोग नहीं हुआ। उस प्रसंग में जितना कहा गया है आज की जो स्थिति है उसको ही बताया है। विशेष रूप से जो माननीय प्रधानमंत्री जी का वक्तव्य था वह उन्होंने वहां जाने के बाद

जो महसूस किया, मार्मिक पीड़ा का प्रकटीकरण किया है, उसको ध्यान में रखते हुए मैं कहना चाहता हूं कि माननीय तिवारी जी ने जो कहा है उसमें कोई असंसदीय बात नहीं कही है, इसलिये आप इसको देख लें।

श्री लालजी टण्डन–

मान्यवर, मेरा एक सुझाव है कि हम इस देश की सबसे बड़ी पीठ के पीठासीन अधिकारी के लिये श्रद्धांजलि दे रहे हैं और यह दूसरी बात है। इन दोनों विषयों को अलग-अलग कर लें अन्यथा जो संदेश जायेगा वह दूसरे प्रकार का जायेगा। मेरा निवेदन है कि इसको रेफरेंस के रूप में ले लें। योगी जी के निधन पर श्रद्धांजलि दे रहे हैं। यह तो प्रसंग, नेता सदन ने उचित समझा कि जो अन्य लोग मरे थे उनको श्रद्धांजलि देनी चाहिए। सभी लोग इससे सहमत हुए।

श्री अध्यक्ष–

मुझे अपने विवेक का प्रयोग करने दीजिये।

मुख्यमंत्री (सुश्री मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी, विपक्ष की ओर से जो माननीय प्रधानमंत्री जी के बारे में, उनके स्टेटमेंट को लेकर, जो कुछ गुजरात मुद्दे को लेकर कहा गया है, उसके बारे में मुझे यह कहना है कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने गुजरात के मुद्दे को लेकर जाति और धर्म के चक्कर में न पड़कर दलगत राजनीति से ऊपर उठकर मानवता और इंसानियत के नाते उन्होंने कहा था। इसका हमें राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए, सदन में जो राजनीतिकरण किया जा रहा है यह ठीक नहीं है।

श्री मो० आजम खां–

यह प्रधानमंत्री के बचाव करने की जगह नहीं है। विपक्ष ने यह प्रस्ताव नहीं रखा था।

श्री अध्यक्ष–

यह मुझे कहने दें तो ठीक रहेगा।

श्री मो० आजम खां–

यह शब्द, यह बात, कार्यवाही का हिस्सा नहीं बननी चाहिए।

श्री अध्यक्ष–

हम इस समय लोक सभा के दिवंगत अध्यक्ष को श्रद्धांजलि दे रहे हैं। माननीय नेता सदन ने देश के तीन बड़े नेताओं की पत्नियों के निधन के सम्बन्ध में शोक संवेदनायें और गुजरात में निर्दोष लोगों की जो मृत्यु हुई उसके बारे में शोक संवेदनायें व्यक्त की हैं। इसमें हम ऐसा करते हैं कि इसको दो हिस्सों में कर लेते हैं, एक बार दो मिनट का मौन धारण करेंगे बालयोगी जी के निधन पर और दूसरे हिस्से में हमारे पुराने सदस्यों की जो मृत्यु हुई है इस पर जो यहां प्रस्ताव आये हैं, देश में अगर कोई बड़ी त्रासदी होती है गुजरात में भूकम्प की घटना हुई और दुर्घटनाओं पर प्रस्ताव आता है उसमें माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष हस्ताक्षर कर देते हैं उस पर चर्चा नहीं होती है। आज माननीय नेता सदन ने लिखित न देकर मौखिक प्रस्ताव रख दिया और तीन बड़े नेताओं की पत्नियों के सम्बन्ध में भी शोक संवेदनायें प्रकट की हैं। जैसा मैंने कहा कि इसको दो हिस्सों में किये देते हैं। माननीय लालजी टण्डन ने

सुझाव दिया, उपयुक्त होगा कि अवसर की गम्भीरता को देखा जाए । थोड़ी सी गर्मी, थोड़ी सी उत्तेजना सदन में हो गयी, आगे की कार्यवाही गम्भीरता से चलेगी ।

श्री प्रमोद कुमार–

यह सदन की परम्परा रही है । माननीय नेता सदन का स्थान सर्वोच्च होता है अगर माननीय नेता सदन की बात में दम हो, उस पर विचार व्यक्त करते हैं । माननीय नेता सदन ने जो आज कहा आपकी अनुमति से कहा, जो कुछ भी उन्होंने कहा, उसमें आपकी स्वीकृति भी शामिल है, जब यह कार्यवाही का हिस्सा बन गया तो इस पर सभी दलों के विचार आने चाहिए मैंने देखा अति उत्साह में सिंचाई मंत्री जी ने अटल जी को.....

श्री अध्यक्ष–

आपकी बात समझ गया ।

श्री प्रमोद कुमार–

गलत बोलने से जो पीड़ा होती है उसका एहसास कर सकता हूं ।

श्री ओम प्रकाश सिंह–

मैंने असंसदीय शब्द इनकी किसी बात को नहीं कहा ।

श्री प्रमोद कुमार–

मैं खत्म कर रहा हूं मैं बात को एक किनारे कर रहा हूं । जो कार्यवाही का हिस्सा बन गया, इस पर मैंने एक बार विस्तृत रूप में 35 मिनट तक व्याख्या की है, तो कौन सा अंग निकलेगा, असंसदीय आप निकाल सकते हैं जिसमें आपकी अनुमति नहीं है उसको निकाल सकते हैं लेकिन मैंने सब आपकी अनुमति से कहा है, मैं अन्तिम बार कहकर अपनी बात खत्म कर रहा हूं । आपकी बात का हम राजनीतिकरण नहीं कर रहे हैं, कठिनाई आपकी है [xxx]

(व्यवधान)

श्री भरत सिंह–

सबको समान अवसर दीजिये ।

श्री अध्यक्ष–

यह चर्चा नहीं हो रही है ।

श्री अम्बिका चौधरी–

जो अवसर की गम्भीरता है नेता सदन ने जी०एम०सी० बालयोगी के प्रति अपना शोक प्रस्ताव करते समय उसके साथ तीन महापुरुषों की पलियों, गुजरात में जो मानवता का वध हुआ उसका जिक्र किया नेता सदन ने दो पार्ट करने का अनुरोध नहीं किया है, आपका फ़ैसला मान्यवर, शिरोधार्य है । मेरा अनुरोध है कि नेता सदन ने इसका अनुरोध भी नहीं किया है । प्रस्ताव रखते समय और न नेता

नोट :–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

प्रतिपक्ष ने अपनी सहमति दी है कि इसको दो पार्ट में कर दिया जाय । मात्र भारतीय जनता पार्टी के उप नेता के कहने पर नेता सदन द्वारा रखे गये प्रस्ताव को बदलकर दो टुकड़ों में करना यह लोकतांत्रिक परम्पराओं के अनुकूल नहीं होगा ।

श्री अध्यक्ष–

यह उचित नहीं है । आप बैठ जायें ।

श्री अम्बिका चौधरी–

आप इस पर पुनर्विचार कर लें । यह सदन जानना चाहता है कि नेता सदन मायावती जी हैं या लालजी टण्डन ।

श्री अध्यक्ष–

आप बैठ जायें ।

श्री अम्बिका चौधरी–

औपचारिक प्रस्ताव आये बिना यह उचित नहीं होगा ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय चौधरी जी, माननीया नेता सदन ने कोई प्रस्ताव नहीं रखा था । उन्होंने तीन बड़े नेताओं की पत्नियों के निधन पर कोई प्रस्ताव नहीं रखा और न ही गुजरात के बारे में कोई प्रस्ताव रखा । आपके कथन का कोई आधार नहीं है । यह प्रस्ताव नहीं है । हम शोक प्रकट कर रहे हैं और जब शोक प्रकट हो जाता है तो दिवंगत आत्माओं के परिवार तक उसे पहुंचा देते हैं ।

वर्तमान लोक सभा के अध्यक्ष श्री जी०एम०सी० बालयोगी के निधन पर शोकोद्गार, पूर्व राष्ट्रपति, ज्ञानी जैल सिंह की पत्नी श्रीगती ज्ञान कौर पूर्व प्रधान मंत्री, श्री चरण सिंह की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी

भूतपूर्व सदस्य, विधान सभा तथा पूर्व उप प्रधान मंत्री श्री जगजीवन राम की पत्नी श्रीमती इन्द्राणी देवी के निधन पर तथा गुजरात में दंगों में मारे गये निर्दोष व्यक्तियों के प्रति शोकोद्गार (क्रमागत)

(व्यवधान)

(कई सदस्यों ने खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष–

आप बैठ जायें मैं इसकी अनुमति नहीं दे रहा हूं । मैंने कौकब हमीद जी को पुकार लिया था ।

श्री कौकब हमीद खां–

श्री जी०एम०सी० बालयोगी, जो लोकसभा के अध्यक्ष थे और वे काफी कम उम्र के अध्यक्ष रहे, 51 साल में अध्यक्ष हुए, उनकी अचानक हेलीकाप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गयी । मान्यवर, उनके अचानक निधन से पूरे देश में सनसनी फैल गयी । मैं अपनी तरफ से तथा अपने दल की तरफ से जी०एम०सी० बालयोगी जैसी शख्शियत जिनकी मृत्यु पूरे देश में खली, अपनी शोक संवेदना प्रकट करता हूं और आपसे गुजारिश करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, जितने बड़े लोग हुए हैं उनकी पत्नियों का उनके साथ चलने में, बड़ा बनाने में योगदान रहा है। श्री जगजीवन राम जी की पत्नी का देहान्त, चौधरी चरण सिंह जी की पत्नी का देहान्त तथा श्री ज्ञानी जैल सिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया। चौधरी चरण सिंह जी की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी का 10 मई को डेढ़ बजे देहान्त हो गया। वह 1905 में पैदा हुई थी। हम सब लोग उनको माता जी के रूप में जानते थे। उनका सम्मान करते थे। वे इस सदन की दो बार सदस्या भी रहीं और चौधरी साहब की पूरी जिन्दगी में बिल्कुल साथ-साथ राजनैतिक तथा समाजिक हर कार्यक्रम में रहीं। माता जी के जाने के बाद एक दौर खाली हो गया। यह कहना बिल्कुल गलत न होगा। मैं अपनी तरफ से तथा अपने दल की तरफ से गुजारिश करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, गुजरात की घटना एक कलंक के रूप में है। यदि गुजरात में सिर्फ झगड़ा होता तो यह कोई और बात होती लेकिन इससे सामाजिक ढांचा चरमरा गया है और यदि यह इसी तरह से चलता रहा तो हम इस सदन में बैठने लायक भी नहीं रह जायेंगे। इसलिये मैं प्रार्थना करता हूं कि यह सब अब तो रुक जाये।

श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, श्री बालयोगी जी के संदर्भ में और ज्ञानी जैल सिंह जी, चौधरी चरण सिंह जी और बाबू जगजीवन राम जी की पत्नियों के संबंध में जो विचार यहां प्रकट किए गये मैं उनसे अपने आपको संबद्ध करता हूं। श्री बालयोगी जी सबसे कम उम्र के लोकसभा अध्यक्ष थे। उन्होंने ऐसे सदन का संचालन किया जहां पर 23-24 दलों की सरकार है। सबका विश्वास अर्जित किया। लोकसभा में भी और टेलीविजन में भी मैंने कार्यवाही देखी है। मुझे याद नहीं कि कभी बालयोगी जी उत्तेजित हुए हों या उत्तेजित वातावरण ने उन्हें विचलित किया हो। उनके निधन से पूरे देश को क्षति हुई है।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि श्री ज्ञानी जैल सिंह जी, चौधरी चरण सिंह और बाबू जगजीवन राम जी का बड़ा योगदान रहा है और उनके इस योगदान में उनकी पत्नियों का विशेष योगदान रहा है। इसलिए मैं उनके प्रति भी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं। उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मान्यवर, गुजरात में जो कुछ हुआ गोधरा से लेकर अब तक उससे हम सबको यह महसूस होना चाहिए कि हम सबका सर शर्म से झुक गया है। गुजरात महात्मा गांधी का प्रदेश है जिन्होंने सत्य और अहिंसा का संदेश दिया।

श्रीमन्, सब कहते हैं कि इससे बड़ा आघात लगा है। दुर्भाग्य यह है कि वे अभी तक रुक नहीं पा रहा है। मैं उसके विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं। गुजरात के बारे में बहुत कुछ बोला जा चुका है राज्य सभा में लोक सभा में उससे कोई सद्भावना का विकास हुआ है। मुझे ऐसा नहीं लगता है। हां उससे कटुता आती है, क्या उससे घाव भर सकते हैं, कहीं न कहीं किसी रूप में नमक छिड़कने की बात होती है। वहां लोगों के मन में गहरे घाव लगे हुए हैं सद्भावना का मलहम कैसे लगाया जाय। आज जो विश्वास हिल गया है यह परस्पर विश्वास कैसे कायम किया जाय। कल जो साथ-साथ रहते थे एक दूसरे की जान के दुश्मन हैं। आज 53 वर्ष की आजादी के बाद हम इस मुकाम पर पहुंचे हैं यह चिन्ता का विषय है लज्जा का विषय है। आज प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व बन जाता है कि भय के इस वातावरण को कैसे सामंजस्य पूर्ण बनाया जाय। स्नेहपूर्ण बनाया जाय विश्वासपूर्ण बनाया जाय। जो मेरी परिभाषा है उसे आज देश की सबसे बड़ी सेवा यही होगी। अपने-अपने दृष्टिकोण हो सकते हैं। मेरा

भी दृष्टिकोण है । उसकी चर्चा नहीं करना चाहता हूं कोई आरोप-प्रत्यारोप नहीं करना चाहता हूं । लेकिन मुझे आश्चर्य तब हुआ जब मा० प्रमोद कुमार जी ने देश के प्रधान मंत्री के शब्दों को यहां उद्धरण कर दिया इसमें राजनीति कहां से आ गयी, जो बाजपेयी जी ने कहा था, उसे राजनीतिक मानना पड़ेगा । इतना सेन्सटिव नहीं होना चाहिये । सुनना चाहिये । कई बार प्रस्ताव आया कि गुजरात में गोधरा काण्ड से लेकर आज तक जो हुआ है अब भी हो रहा है । उस प्रस्ताव पर यहां पर चर्चा नहीं करायी गयी है । मैं सत्ता पक्ष को सावधान करना चाहता हूं । उत्तर प्रदेश श्रीमन्, वह प्रदेश है जहां इस प्रकार की आग कभी भी भड़कायी जा सकती है शासन को हर जिले की चिन्ता करनी पड़ेगी । उत्तर प्रदेश गुजरात की लपटों से अछूता रहा है यह हमारे लिये संतोष का विषय है । हमारे यहां तत्व हैं । ऐसे तत्वों को आप भी जानते हैं उसकी चर्चा करने से कोई लाभ होने वाला नहीं है । मैं सत्ता पक्ष और विरोध पक्ष से विनती कर रहा हूं कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर उत्तर प्रदेश में शांति, सद्भाव, परस्पर, विश्वास, भाईचारे की भावना जो है, कोई भी ताकत उसे तोड़ने न पाये, इस रूप में हम पूरी शक्ति को खर्च करें । हम उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधि हैं देश के भी जिम्मेदार नागरिक हैं, उत्तर प्रदेश में दुर्भाग्य से अगर इस प्रकार की कोई बात भड़क उठी । इस गंभीर वातावरण के अन्दर ध्यान देने की आवश्यकता होगी कि कोई भी भाषण कोई भी वाक्य ऐसा न निकल जाये कि जिससे उत्तर प्रदेश का वातावरण छिन्न-भिन्न हो जाये । मैं इससे ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहता क्योंकि बोलते-बोलते मेरा भी मन भरा हुआ है । लोग गिनती करते हैं कि हिन्दू इतने मरे, मुसलमान इतने मरे, मैं जान की परिभाषा इस रूप में नहीं करता, जान जाती है तो वह जान होती है इंसान की जान होती है, जान इंसान की जाती है और एक-एक इंसान की जान हमारे लिए कीमती है । गुजरात में जो कुछ हुआ जितनी हत्याएं हुई भगवान उनकी आत्माओं को शान्ति प्रदान करे, उनके परिवार वालों को दुख सहन करने की शक्ति दे ।

श्री राम स्वरूप सिंह–

अध्यक्ष जी, श्री बालयोगी जी की दुर्घटना में जो मौत हुई और वह सबसे कम उम्र में अध्यक्ष बनें और उनकी जो प्रतिभा थी कि उन्होंने देश की उस सर्वोच्च पीठ पर बैठकर जो अपने अध्यक्ष पद से निर्णय दिये वह भारत के इतिहास में लिखे गये हैं और आने वाली सदियों के लिए प्रेरणा के स्रोत होंगे । मैं अपने दल को, नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता कांग्रेस लोकदल और राष्ट्रीय क्रान्ति दल तथा सभी दलों के नेताओं से संबद्ध करता हूं और आपसे आशा करता हूं कि मेरी शोक-संवेदनाएं उनके परिवार तक, उनके दल तक पहुंचायी जायें साथ ही जो देश के सर्वोच्च नेताओं की पत्नियों का देहान्त हुआ है उसके लिए भी मैं शोक व्यक्त करता हूं और आपसे आशा करता हूं कि उनके परिवारों तक मेरी शोक संवेदनाएं भिजवा दी जायें और गुजरात में जो हत्याएं हो रही हैं जो हुई हैं उनके लिए भी मैं दुःख महसूस करता हूं, बहुत शोकित होता हूं । गुजरात की चर्चाएं काफी दिनों से हो रही हैं लेकिन उस दिन मुझे कुछ जंचा था कि जब हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने यह कहा था कि मैं क्या मुंह लेकर विदेशों में जाऊंगा, जो गुजरात में हो रहा है । हम समझे थे कि उनके अन्दर मानवता जागी है लेकिन कुछ कह नहीं सकता वह तो अटल जी जानें, प्रधानमंत्री जानें कि वह क्या बोल गये थे । वह रो रहे थे, रोये तो भीष्म पितामह भी थे, द्रोणाचार्य भी थे जब द्रौपदी का चीर हरण हो रहा था लेकिन उस समय वे क्या कर सकते थे, वे विवश थे । ये रो रहे हैं कि जैसे कुछ है ही नहीं, देश के प्रधानमंत्री हैं, ये इन्तजाम कर सकते थे, गुजरात सरकार को बर्खास्त कर सकते थे । यह गंभीर समस्याएं हैं देश कहां जा रहा है क्या हो रहा है देश में ? यह बड़ी गंभीर समस्याएं हैं महान दुःख का विषय है ।

गुजरात के दंगे मानवता के लिए इंसानियत के लिए और भारत के लिए एक कलंक हैं और हम सबके लिए एक कलंक हैं इसमें जितना भी दुख व्यक्त किया जाये वह कम है । मैं आपसे आशा करता हूं कि मेरी शोक संवेदनाएं गुजरात के बच्चे-बच्चे तक पहुंचा दी जायें ।

श्री श्याम सुन्दर शर्मा–

माननीय अध्यक्ष जी, आदरणीय बालयोगी जी के संदर्भ में जो नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और अन्य सभी दलों के नेताओं ने जो संवेदना प्रकट की है मैं उससे अपने विचारों को सम्बद्ध करता हूं । खासतौर से आदरणीय बालयोगी जी के संदर्भ में भारत के लोकतंत्र में आचार संहिता के संदर्भ में, जो उन्होंने अगुवाई की थी उनके सम्पर्क में मुझे आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था हम उनके बड़े कायल हैं । वह देश में लोकतंत्र के प्रकटीकरण का भाव कैसा हो यह उनका संकल्प और उद्देश्य था । उनके विद्रोह से हमें बड़ा कष्ट है । तुलसीदास जी ने लिखा है–

"मिलत एक दारूण दुःख देहीं,
बिछुड़त एक प्राण हरिलेहीं ।"

तो इस अवसर पर हम अपने भगवान से प्रार्थना करते हैं आपसे आग्रह करते हैं कि हमारे दल की संवेदनाएं वहां तक पहुंचाने का कष्ट करें । जहां तक तीन महापुरुषों की पत्नियों के संदर्भ में हैं उन महान पुरुषों ने देश की सम्प्रभुता, रचना, निर्माण में जो योगदान दिया था उसमें निश्चित रूप से उनका योगदान था उनकी भी संवेदनाएं हमारे दल की ओर से पहुंचाने का आपसे आग्रह है । गुजरात की त्रासदी के संदर्भ में जो विचार सारे दल के नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करते हुये आग्रह करता हूं कि मेरी और हमारे दल की शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री शंखलाल माझी–

माननीय अध्यक्ष जी, मरहूम नेता जी०एम०सी० बालयोगी के प्लेन क्रेश द्वारा हुए निधन पर नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता राष्ट्रीय क्रान्ति दल तथा सभी दल के नेता जो शोक संवेदना व्यक्त किये हैं हम अपने को उनके विचारों से सम्बद्ध करते हैं और सम्बद्ध करते हुए उस महान नेता को जो दलित परिवार में जन्में थे और अपने मेघावी जीवन की शुरूआत से ही राजनीति उन्होंने निचले स्तर से की और हिन्दुस्तान के सबसे बड़े पंचायत घर का अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त किया । शुरूआती कैरियर वकील के रूप में उन्होंने शुरू किया था, मजिस्ट्रेट भी बने और बाद में तेलगू देशम पार्टी से जुड़कर विधान सभा की राजनीति से शुरू होकर लोकसभा तक पहुंचे । उनके असामाजिक, असामयिक निधन से जनता दल यू परिवार के लोग अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त करते हैं ।

देश के तीन महान विभूतियों की धर्मपत्नियों के निधन पर भी हम अपनी ओर से अपने दल की तरफ से शोक संवेदनाएं व्यक्त करते हैं । खासतौर पर हिन्दुस्तान के किसानों, मजदूरों, मजलूमों की लड़ाई लड़ने वाले महान नेता व भारत के पूर्व प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह की धर्म पत्नी माता गायत्री जी जिन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इस देश के लिए भी उन्होंने अपना योगदान दिया है, जेल की यात्रायें भी की । उनके निधन पर हम अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुये आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी संवेदनाएं वहां तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री जी०एम०सी० बालयोगी जी के निधन के विषय में जो विचार माननीय नेता सदन, नेता विपक्ष, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी तथा अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, 2-4 बार मैंने भी लोकसभा की कार्यवाही, गैलरी में बैठकर बालयोगी जी के समय में, देखी है और मैंने जो महसूस किया, उसके अनुसार इस संसदीय लोकतंत्र में वाद विवाद की बात कहने के बजाय, विधान सभा और लोक सभा में जो हुड़दंग का वातावरण बनता जा रहा है। ऐसे वातावरण को शान्त करके लोकसभा की कार्यवाही को संचालित करने की ऐसी मिसाल, मैंने ऐसे उनके अनुभव को देखा है। वह सबसे कम उम्र के लोक सभा अध्यक्ष थे और हर दल के नेताओं और हर जनप्रतिनिधि का प्यार पाना अपने आप में महत्वपूर्ण बात है। ऐसे व्यक्ति के असमय हमारे बीच से उठ जाना देश के लिये सबसे बड़ी दुखद घटना है। मैं अपनी तरफ से अपने दल की तरफ से, उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करेंगे।

मान्यवर, देश के महान 3 नेताओं स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह, स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह जी, स्वर्गीय जगजीवन राम जी की पत्नियों के देहान्त के विषय में जो विचार माननीय नेता सदन, नेता विपक्ष तथा अन्य नेताओं ने रखे हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। इन तीनों महान विभूतियों की पत्नियों का देश की राजनीति में सक्रिय योगदान रहा है, भागीदारी रही है।

गुजरात में जो निर्दोष लोग मारे गये हैं, चाहे वह किसी भी वर्ग के हों, उनके भी विषय में हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और आपसे निवेदन करते हैं कि मेरी तथा मेरे दल की तरफ से शोक संवेदनाएं उनके परिवारों तक भिजवाने का कष्ट करें।

श्री संजय गर्ग–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री गन्ती मोहन चन्द्र बालयोगी और इस मुल्क के 3 राष्ट्रीय नेताओं की धर्म पत्नियों तथा गोधरा–गुजरात के संबंध में जो शोक संवेदनायें माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी तथा अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं ने प्रकट की हैं, मैं उनसे अपने आपको सम्बद्ध करते हुये आपसे प्रार्थना करता हूं कि श्री गन्ती मोहन चन्द्र बालयोगी जी 3 मार्च, 2002 को हेलीकाप्टर में यात्रा करते हुये आकस्मिक रूप से मारे गये। निश्चित रूप से वह हिन्दुस्तान के सर्वोच्च संसद के सर्वप्रथम सबसे युवा दलित लोकसभाध्यक्ष थे। दो बार लोकसभा के इस गौरवमयी पद पर बैठकर उन्होंने पूरी निष्पक्षता के साथ अपनी कार्यकुशलता को दिखाया तथा संसद का गौरव बढ़ाने का काम किया।

माननीय अध्यक्ष जी, श्री बालयोगी जी, तेलगू देशम पार्टी की ओर से 10वीं, 12वीं और 13वीं लोकसभा के सदस्य रहे। वह आंध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य भी रहे, वह वहां उच्च शिक्षा मंत्री के पद पर भी कार्यरत रहे। उनके आकस्मिक निधन से इस पूरे राष्ट्र को अपूर्णीय क्षति हुई है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे और उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहने की क्षमता प्रदान करे। मान्यवर, स्वर्गीय जगजीवन राम, चौधरी चरण सिंह और ज्ञानी जैल सिंह जी की धर्मपत्नियों के निधन पर हम अपनी संवेदनायें प्रकट करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे और उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

मान्यवर, गोधरा और गुजरात की घटनाओं के सम्बन्ध में माननीया नेता सदन ने इस संवेदनशील मुद्दे पर जो संवेदना व्यक्त की हैं, मैं उसके लिए माननीया नेता सदन का आभार व्यक्त करता हूं। गुजरात में जो कुछ हुआ वह बहुत ही शर्मनाक है। आजादी के 51 वर्ष बाद इस तरह की घटनाओं से हमारा सर शर्म से झुक जाता है। इंसानियत किस तरह सहअस्तित्व की भावना के साथ सुख दुख में शामिल रह कर सुरक्षित महसूस कर सके और सामाजिक विकास कर सके। प्राचीन काल में भी हमारे अनेक महापुरुषों ने आध्यात्म की पताका को पूरी दुनिया में फहराने का काम किया है और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को चरितार्थ किया है। भगवान बुद्ध ने हमें मध्यम मार्ग पर चलने में अष्टांगिक नियमों का सबक सिखाया है। भगवान महावीर ने अनेकांत तथा जियो और जीने दो, बाबा नानक ने एक पराया अपना तू सुर तूत ग्रन्थ तथा सूफी सन्तों ने एक अनूठी भारतीय संस्कृति को बनाया है। भारतीय मानव के विकास की प्रक्रिया में आदिम साम्यवाद, दास प्रथा, सामन्तवाद के बाद आज पूंजीवाद समतामूलक समाज के निर्माण में हमने एक धर्मनिरपेक्ष समाजवादी संविधान के अंगीकृत किया। जिस अहिंसा के पुजारी महामानव की सारी दुनिया राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नाम से जानती है, उस महामानव की धरती पर ही खुली तौर पर जान और माल की होली खेलने का काम किया गया। वहां किसी हिन्दू या मुसलमांन की जान नहीं गयी बल्कि गोधरा और गुजरात में जो कुछ हुआ है वह पूरी तरह से हिन्दुस्तानित का कत्ल है। हमें इस बात को सोच कर शर्म आती है कि ऐसी घटनाओं के बाद भी लोकतंत्र मूक बन कर रह गया। हत्यारों ने वहां हिटलर को भी पीछे छोड़ दिया। हमारे प्रधान मंत्री जी ने भी इस घटना से द्रवित होकर इसे सबके सामने राष्ट्रीय शर्म की संज्ञा देने का काम किया है। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना के प्रति पूरा सदन और मेरी पार्टी निश्चित रूप से न केवल निन्दा करती है बल्कि उसके लिए चिन्ता जाहिर करने का काम करती है। मान्यवर, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता ने जो सुझाव रखा है, वह अच्छा सुझाव है। जो लोग शिविरों में रह रहे हैं.....

श्री अध्यक्ष–

यह चर्चा नहीं हो रही है।

श्री संजय गर्ग–

मान्यवर, वहां के जो निरीह लोग हैं जो आज भी शिविरों में रह रहे हैं और अपने घरों को जाने में असुरक्षा महसूस कर रहे हैं। मैं आपके माध्यम से आग्रह करता हूं कि एक माह के वेतन को उन राहत शिविरों में रहने वाले लोगों तक पहुंचाने की कृपा करें। मान्यवर, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने और अपने दल की ओर से शोक संवेदनायें प्रकट करता हूं। आपसे अनुरोध है कि हमारी ये भावनाएं शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री महबूब अली–

मान्यवर, लोकतंत्र में आस्था रखने वाले दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश हिन्दुस्तान के लोक सभा अध्यक्ष की कुर्सी पर आसीन होने वाले सबसे कम उम्र के नेता श्री जी० एम० सी०. बालयोगी की 3 मार्च, 2002 को एक विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। उनके संबंध में जो विचार नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और दूसरे पार्टी के नेताओं के आये हैं मैं उनके विचारों से अपने आपको सम्बद्ध करते हुए अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी शोक संवेदनायें उनके दुखी परिवार तक पहुंचाई जाएं।

मान्यवर, दूसरे देशों में नाम रोशन करने वाले और इस देश की ऊंची कुर्सी पर जाने वाले तीन महान विभूतियों की धर्म पलियों की मृत्यु पर जैसा कि दूसरी पार्टी के लोगों ने कहा है कि किसी भी आदमी को ऊंचाई तक पहुंचाने के लिए पत्नी का योगदान रहता है । इसी तरह से इन तीन आदरणीय स्व० श्री चौधरी चरण सिंह जी, स्व० जगजीवन राम जी, स्व० ज्ञानी जैल सिंह जी की पत्नियों की मृत्यु पर मैं अपने आपको दूसरे दलों के विचारों से सम्बद्ध करते हुए आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरे और मेरे दल की तरफ से शोक संवेदनाएं उनके परिवारों तक पहुंचायी जाएं ।

मान्यवर, जिस तरह से आज पूरा देश भली-भांति अवगत है कि गोधरा काण्ड से लेकर तीन माह तक इस तरह से निर्दोष लोगों की हत्याएं हो रही हैं, इस पर दूसरी पार्टी के लोगों ने जो विचार रखे हैं मैं भी अपने आपको उनसे सम्बद्ध करता हूं । आपसे अन्त में यही अनुरोध है कि वहां के सभी दुःखी परिवारों तक मेरी शोक संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें ।

डा० राधा मोहन दास अग्रवाल–

माननीय अध्यक्ष जी, बहुत सारी बातें कही जा चुकी हैं । नेता सदन की बातों से अपने आपको सम्बद्ध करते हुए सिर्फ छोटी सी बात कहना चाहूंगा । हिन्दू संस्कृति में मानव के जीवन को चार हिस्सों में बांटा गया है–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास । किन्तु श्री बालयोगी जी जब वानप्रस्थ की ओर जाने का प्रयास कर ही रहे थे कि तभी उनकी असमायिक मृत्यु हो गयी । इस बात का मुझे दुःख है । मैं अपनी संवेदना को मैथली शरण गुप्त की कविता के माध्यम से व्यक्त करता हूं—

"वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे,

मरा वही नहीं कि जो जिया न आपके लिए,

हुई न यो सुमृत्यु तो, वृथा मरे, वृथा जिये ।"

मान्यवर, अन्त में मैं अपनी बात समाप्त करते हुए सिर्फ यही कहूंगा कि हमारी संवेदनायें उनके साथ हैं । बहुत सारे मुद्दे उठाये गये हैं । नेता सदन की बातों से अपने आपको जोड़कर और आपकी स्वीकृति से जम्मू कश्मीर में जो आतंकवादियों द्वारा भारतीय नागरिक मारे गये हैं उनके प्रति भी अपनी संवेदना प्रकट करता हूं ।

श्री दीनानाथ कुशवाहा–

माननीय अध्यक्ष जी, जी० एम० सी० बालयोगी के असामयिक निधन पर मैं गहरा दुःख व्यक्त करता हूं । श्री बालयोगी एक कुशल सांसद एवं असाधारण प्रतिभा सम्पन्न तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे । उन्हें जब भी संसद में अपनी प्रतिभा/योग्यता प्रमाणित करने का अवसर मिला । उन्होंने अपनी योग्यता को प्रमाणित करने का काम किया । ऐसे समय में जब राष्ट्र को जी० एम० सी० बालयोगी की जरूरत थी वह असमय हमारे बीच से चले गये । उनके निधन से जो रिक्तता आयी है उसको लम्बे समय तक नहीं भर पायेंगे । देश को अपूर्णीय क्षति हुई है । मैं जी० एम० सी० बालयोगी के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करता हूं ।

मान्यवर, जब देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था । उस समय चौधरी चरण सिंह, जगजीवन राम जी स्वाधीनता संग्राम सेनानी रहे और देश के उप प्रधान मंत्री से लेकर प्रधान मंत्री तक की कुर्सी पर पहुंचे। चौधरी चरण सिंह जी की पत्नी स्व० गायत्री देवी इस सदन और लोकसभा की सदस्या रहीं और अपनी प्रतिभा से गरीब और दबे-कुचले लोगों की दुःख तकलीफ में भागीदार रहीं । मैं उनके निधन पर

दुःख व्यक्त करता हूं। मान्यवर, नेता सदन के हृदय में जो पीड़ा है, दर्द है वह कोई मामूली दर्द नहीं है। नेता प्रतिपक्ष, नेता कांग्रेस पार्टी, नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी, नेता अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, नेता नेशनल लोकतांत्रिक पार्टी एवं अन्य नेताओं ने जो अपने विचार व्यक्त किये हैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, आज इलेक्ट्रानिक एवं प्रिंट मीडिया, गुजरात के अन्दर जो कुछ हो रहा है उसकी बयां कर रही है। गुजरात के घटनाक्रम को देश ही नहीं पूरा विश्व देख रहा है। नेता सदन के हृदय में जो पीड़ा है वह स्वाभाविक है। आज जो देश की हालात हैं उसके बारे में हमारे देश की सर्वोच्च कुर्सी पर बैठे हुए माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपनी पीड़ा व्यक्त की। मैं बड़े अदब के साथ कहना चाहता हूं कि शांति और अहिंसा के महानायक का गुजरात जल गया। आज गुजरात में कीचड़ से कीचड़ साफ करने का प्रयास किया जा रहा है, कीचड़ तभी साफ होगा जब पानी फेंकने का काम करेंगे। आज गुजरात के अन्दर "न्यूटन के तीसरे नियम" का प्रयोग हो रहा है कि प्रत्येक क्रिया के पीछे प्रतिक्रया जरूर होती है।

श्री अध्यक्ष–

यहां हम कारणों की मीमांसा नहीं कर रहे हैं, शोक संवेदना अर्पित कर रहे हैं।

श्री दीनानाथ कुशवाहा–

मान्यवर, लोकसभा के पूर्व सांसद अहसान जाफरी को जिन्दा जला दिया गया। गुजरात के अन्दर एक जज को घर छोड़कर भागना पड़ा। वहां पर पहली बार एक आई०पी०एस० अफसर को, आई०पी०एस० अफसर होने के नाते नहीं बल्कि एक धर्म से जुड़े होने के कारण प्रताड़ित करने का काम किया गया। इस सदन के माध्यम से गुजरात के अन्दर एक संदेश जाना चाहिये। आज गुजरात के लाखों लोग शरणार्थी शिविरों में रह रहे है। अहमदाबाद में ही 40 हजार लोग शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं। चाहे सत्ता पक्ष के लोग हों या विपक्ष के लोग हों, जैसा कि माननीय कौकब हमीद ने कहा मैं उनकी पीड़ा के दर्द को समझता हूं। मैं माननीय नेता सदन से कहना चाहता हूं कि उनके हृदय और दिल में पीड़ा है वह मामूली पीड़ा नहीं है। आज सारा देश गुजरात के घटनाक्रम से उद्वेलित है। मैं कहना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष–

कहिये नहीं, शोक प्रकट करिये।

श्री दीनानाथ कुशवाहा–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

यह लिखा नहीं जायेगा।

श्री दीनानाथ कुशवाहा–

मान्यवर, मैं अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं। मान्यवर, आप भी पहली बार जीत कर आये होंगे, मैं भी पहली बार जीत कर आया हूं। जो संसदीय महानायक रहे हैं इस देश के उनकी पत्नियों के निधन पर मैं अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्री अध्यक्ष–

दिनांक 3 मार्च, 2002 को लोक सभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री गन्ती मोहन चन्द्र बालयोगी का हेलीकाप्टर दुर्घटना में निधन हो गया उनकी आयु उस समय लगभग 51 वर्ष की थी। स्वर्गीय बालयोगी

नोट :–[x x x] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

के बारे में जो भी विचार माननीय नेता सदन, माननीय प्रतिपक्ष, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता राष्ट्रीय क्रांतिदल और अन्य नेताओं ने प्रकट किये हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं।

लोक सभा के अध्यक्ष होने के नाते बालयोगी से मेरी बहुत ही घनिष्ठता थी। उनके साथ अनेक बार अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में विदेशों में मुझे भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। भारत का एक सही चित्र प्रस्तुत करने वह बहुत सफल रहते थे। संसदीय लोकतंत्र से सम्बन्धित विषय जो अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उठते थे उनमें उनकी सक्रिय भागीदारी रहती थी। एक अद्भुत उत्साह उनमें दिखायी पड़ता था कि भारत का प्रतिनिधित्व उन सम्मेलनों में जितने निर्धारित विषय हैं, उनमें अवश्य हो। मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूं कि उन्होंने देश के पीठासीन अधिकारियों से सम्बन्धित समस्याओं पर संसदीय लोक तंत्र से सम्बन्धित समस्याओं पर जो अनेक समितियां गठित की थी उनमें से कुछ का सदस्य व संयोजक मुझे भी बनाया गया था इस कारण से मैं तो उन्हें नजदीक से जानता था। वे एक बहुत सरल व्यक्तित्व, लोकतंत्र के प्रति समर्पित, ईमानदार व्यक्ति थे। उनकी निष्पक्षता और न्यायप्रियता पर कभी किसी को संदेह नहीं हुआ। उनके निधन से निश्चित रूप से भारत के संसदीय लोकतंत्र को हानि हुई है।

मुझे आज अच्छी तरह से स्मरण है 1992 में श्री शिवराज पाटिल, लोक सभा के अध्यक्ष थे तब उन्होंने लोक सभा सांसदों विधायकों की आचार संहिता की व्याख्या करने के लिए दो दिन की गोष्ठी आयोजित करवाई थी उसमें बहुत अच्छे विचार आए थे। फिर गत वर्ष माननीय सांसदों और विधान मण्डल सदस्यों की आचार संहिता के सम्बन्ध में एक ड्राफ्टिंग कमेटी बनाई उसमें मुझे भी सदस्य बनाया गया उसमें जब बैठ कर वे विचार विमर्श करते थे तो उनके हृदय की उत्कृट अभिलाषा प्रकट होती थी कि किस प्रकार से देश में संसदीय लोकतंत्र की जड़े मजबूत करें। 25 नवम्बर 2001 को ऐतिहासिक घटना हुई थी इस देश के लोकतांत्रिक इतिहास में जब सांसदों/विधान मण्डल के सदस्यों के लिए आचार संहिता को स्वीकार किया गया था। संसदीय लोकतंत्र में श्री बालयोगी जी का बहुत बड़ा योगदान था। उनके निधन से न केवल देश को क्षति हुई है मुझे भी व्यक्तिगत रूप से हानि हुई है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दे व उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे। आपने जो शोकोद्गार प्रकट किए हैं उनको मैं उनके परिवार तक पहुंचा दूंगा। सभी से अनुरोध है कि दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए खड़े होकर दो मिनट का मौन रखें।

(दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए।)

आप लोग आसन ग्रहण करें। देश के तीन महान नेताओं की धर्म पत्नियों का भी हाल ही में निधन हो गया है। श्रीमती ज्ञान कौर ज्ञानी जैल सिंह की पत्नी थीं उनका निधन 11 मई को हो गया। निश्चित रूप से ज्ञानी जैल सिंह के उत्कर्ष में उनका बहुत बड़ा योगदान था। उनकी आयु लगभग 83 वर्ष की थी। उनके परिवार में एक पुत्र और तीन पुत्रियां हैं। मैं माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और संभी माननीय नेताओं ने उनकी मृत्यु पर जो शोकोद्गार व्यक्त किए हैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमती गायत्री देवी पत्नी चौ० चरण सिंह का निधन 10 मई 2002 को हो गया वह दो बार इस सदन की सदस्य रहीं उनके शोक के सम्बन्ध में कुछ औपचारिकताएं हैं जो पूरी नहीं हो पाई थीं इसलिए जो पूर्व सदस्यों की सूची थी उसमें उनका नाम अंकित नहीं हो पाया। क्योंकि हमारे विधान सभा की एक प्रक्रिया है हम सम्बन्धित जिलाधिकारी से उसकी पुष्टि करते हैं। जब कार्यवाही हो रही थी उसी समय इसकी पुष्टि आई है। श्रीमती गायत्री देवी की आयु लगभग 97 वर्ष की थी सर्वप्रथम 1969 में इगलास विधान सभा क्षेत्र से भारतीय क्रांति दल से विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुई उसके बाद 1974 में वह पुनः विधान सभा की सदस्य निर्वाचित हुई। 1980 में लोक सभा की सदस्य निर्वाचित हुई। श्रीमती गायत्री देवी ने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। 1930 में वे जेल गईं। वे गाजियाबाद स्त्री समाज की सैक्रेटरी रहीं। वे आर्य समाज गाजियाबाद तथा उत्तर प्रदेश महिला एसोसिएशन की

अध्यक्ष भी रहीं । सामाजिक कार्यों विशेष कर महिला उत्थान में उनकी सदैव रुचि रही । उनके निधन से प्रदेश ने एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल राजनीतिज्ञ, पति को सम्बल देने वाली समाजसेवी महिला को खो दिया है । श्रीमती इंद्राणी देवी जो श्री जगजीवन राम जी की धर्मपत्नी थी का 15 अप्रैल, 2002 को निधन हो गया । उनके सम्मान में माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष ने भी शोकोद्गार प्रकट किये हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । गुजरात की घटना भी एक दुःखद घटना है । कहीं भी, किसी भी स्थान पर किसी निर्दोष व्यक्ति की जब मृत्यु होती है तो हमारी संवेदना झंकझोर उठती है, मन पीड़ा से कराहता है । इसमें संदेह नहीं कि उसकी अभिव्यक्ति लोग भिन्न-भिन्न शब्दों में, भिन्न-भिन्न अवसरों पर अपनी-अपनी अनुभूतियों के आधार पर प्रकट करते हैं । आज इस सदन में गुजरात में निर्दोष लोगों की जो मृत्यु हुई है, उस पर, माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, नेता कांग्रेस, नेता राष्ट्रीय क्रांति पार्टी और अन्य नेताओं ने जो शोकोद्गार प्रकट किये हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन तीनों महिलाओं, जिनकी मृत्यु हुई है और गुजरात में जो निर्दोष व्यक्ति मारे गये हैं, ईश्वर उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करें और उनके परिवारों को इस भारी दुःख को सहन करने की शक्ति दें । आप सभी के द्वारा व्यक्त शोकोद्गार उनके परिवारों तक पहुंचा दिये जायेंगे ।

गुजरात के सम्बन्ध में जो शोक संवेदनाएं प्रकट की गई हैं , आपकी भावनाओं को गुजरात के महामहिम राज्यपाल तक पहुंचा दिया जायेगा । आप से अनुरोध करता हूं कि इन सभी दिवंगत आत्माओं की शांति के लिये हम सब खड़े होकर दो मिनट का मौन रखेंगे ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए ।)

श्री अध्यक्ष–

अब हम उठते हैं कल पुनः 11.00 बजे बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन का उपवेशन 1 बजकर 44 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया)

लखनऊ ।

दिनांक 16 मई 2002

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

पी०एस०यू०पी०–एल० 152 विधान सभा (262)–2-8-2002–813 (डी०टी०पी०) ।